चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिलें संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

आश्विन-कार्तिक, युगाब्द 5127, अक्तूबर 2025

भारत की मूल अवधारणा का पुनर्जागरण

संघ शताब्दी के उपलक्ष्य में संकल्प

विश्व शांति और समृद्धि के लिए समरस और संगठित हिन्दू समाज का निर्माण

– अनंत काल से ही हिंदू समाज एक प्रदीर्घ और अविस्मरणीय यात्रा में साधनारत रहा है, जिसका उद्देश्य मानव एकता और विश्व कल्याण हैद्व तेजस्वी मातृशक्ति सहित संतों, धर्माचार्यों, तथा महापुरुषों के आशीर्वाद एवं कर्तृत्व के कारण हमारा राष्ट्र कई प्रकार के उतार–चढ़ावों के उपरांत भी निरंतर आगे बढ रहा है।

– काल के प्रवाह में राष्ट्र जीवन आए अनेक दोषों को दूर कर एक संगठित, चारित्र्यसंपन्न और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत को परम वैभव तक ले जाने हेतु परम पूजनीय डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने सन 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य प्रारम्भ किया। संघकार्य का बीजारोपण करते हुए, डॉ हेडगेवार ने दैनिक शाखा के रूप में व्यक्ति निर्माण की एक अनूठी कार्यपद्धति विकसित की, जो हमारी सनातन परंपराओं व मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण का निस्वार्थ तप बन गया। उनके जीवनकाल में ही इस कार्य का एक राष्ट्रव्यापी स्वरूप विकसित हो गया। द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) के दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्रीय जीवन के विविध क्षेत्रों में शाश्वत चिंतन के प्रकाश में कालसुसंगत युगानुकूल रचनाओं के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।

– सौ वर्ष की इस यात्रा में संघ ने दैनिक शाखा द्वारा अर्जित संस्कारों से समाज का अटूट विश्वास और स्नेह प्राप्त किया। इस कालखंड में संघ के स्वयंसेवकों ने प्रेम और आत्मीयता के बल पर मान–अपमान और राग–द्वेष से ऊपर उठ कर सबको साथ लेकर चलने का प्रयास किया। संघकार्य की शताब्दी के अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि पूज्य संत और समाज की सज्जन शक्ति जिनका आशीर्वाद और सहयोग हर परिस्थिति में हमारा संबल बना, जीवन समर्पित करने वाले नि:स्वार्थ कार्यकर्ता और मौन साधना में रत स्वयंसेवक परिवारों का स्मरण करें।

– अपनी प्राचीन संस्कृति और समृद्ध परंपराओं के चलते सौहार्दपूर्ण विश्व का निर्माण करने के लिए भारत के पास अनुभवजनित ज्ञान उपलब्ध है। हमारा चिंतन विभेदकारी और आत्मघाती प्रवृत्तियों से मनुष्य को सुरक्षित रखते हुए चराचर जगत में एकत्व की भावना तथा शांति सुनिश्चित करता है।

– संघ का यह मानना है कि धर्म के अधिष्ठान पर आत्मविश्वास से परिपूर्ण संगठित सामूहिक जीवन के आधार पर ही हिंदू समाज अपने वैश्विक दायित्व का निर्वाह प्रभावी रूप से कर सकेगा। अत: हमारा कर्तव्य है कि सभी प्रकार के भेंदों को नकारने वाला समरसता युक्त आचरण , पर्यावरणपूरक जीवनशैली पर आधारित मूल्याधिष्ठित परिवार, 'स्व' बोध से ओतप्रोत और नागरिक कर्तव्यों के लिए प्रतिबद्ध समाज, का चित्र खड़ा करने के लिए हम सब संकल्प करते हैं ।हम इसके आधार पर समाज के सब प्रश्नों का समाधान, चुनौतियों का उत्तर देते हुए भौतिक समृद्धि एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण समर्थ राष्ट्रजीवन खड़ा कर सकेंगे।

– अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सज्जन शक्ति के नेतृत्व में संपूर्ण समाज को साथ लेकर विश्व के सम्मुख उदाहरण प्रस्तुत करने वाला समरस और संगठित भारत का निर्माण करने हेतु संकल्प करती है।

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 10 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
आश्विन-कार्तिक, कलियुगाब्द 5127, अक्तूबर 2025

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

इस अंक में...

संपादकीय	संघ का संकल्प : एक भारत, श्रेष्ठ भारत	5
चिन्तन	साहित्य समाज का दर्पण	6
प्रेरक प्रसंग	कालिदास और सरस्वती	7
आवरण	एक भारत, श्रेष्ठ भारत के प्रबल...	8
	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष	10
	संघ शताब्दी की स्वर्णिम यात्रा	12
महिला जगत्	मंडी की अंजली ठाकुर ने रचा इतिहास	13
संगठनम्	हिमाचल में संघ और सेवा भारती...	14
देवभूमि	नेपाल के पशुपति नाथ का इतिहास	17
नवाचार	नई शुरूआत की कोई उम्र नहीं-क्षमा शर्मा	19
देश प्रदेश	मणिपुर में पहली बार पहुंची रेल	20
धर्म जागरण	पंडित दीनदयाल उपाध्याय अमृत वचन...	21
इतिहास	विदेशों में रामायण कथा की परंपरा	22
पुण्य स्मरण	ध्येयनिष्ठ तपस्वी डॉ. सत्यपाल जी	24
युवा पथ	मॉनीरंग शिखर पर चार पर्वतारोहियों ने...	26
पंच परिवर्तन	नागरिक कर्त्तव्यों से सशक्त होता भारत	27
विजयादशमी	श्री रघुनाथ जी एवं विजयादशमी	28
समसामयिकी	जीएसटी 2.0 जनता के प्रति जवाबदेही...	30
कृषि	भारत के किसानों, मछली पालकों....	32
काव्य जगत्	संघ : एक प्रयास भारत का	32
विश्व दर्शन	मंदिरों में बदल रहे पश्चिम के चर्च	34
बाल जगत्	मित्र और शत्रु की पहचान	35

अमृत वचन

जब तक आप अपने मन को परास्त नहीं करते,
तब तक कोई भी शक्ति आपको परास्त नहीं कर सकती।
- स्वामी विवेकानंद

पाठकीय...

सम्पादक महोदय,

मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि हिमाचल जैसे शान्त प्रदेश में प्रवासियों की संख्या एकाएक बढ़ना चिन्ता का विषय बन चुका है। हमारा हिमाचल एक शान्त पहाड़ी प्रदेश है। जहां के प्रदेशवाासियों की गिनती पूरी दुनिया में देवभूमि के ईमानदार लोगों में होती है। हिन्दू प्रदेश में पिछले 15-20 वर्षों से प्रवासी मुस्लिम समुदाय के लोगों की संख्या में एकदम बढ़ोतरी होना चिन्ता का विषय है। हिमाचल प्रदेश की डेमोक्रेसी को बदलने में यह समुदाय बहुत तेजी से और संगठित होकर कार्य कर रहे हैं। जिन मुस्लिम परिवारों की प्रदेश में जमीन और मकान पहले से बने हुए हैं, उन परिवारों के मकान और जमीन एक से पांच जगह हो गई है। यह समुदाय बाहर से अपने समुदाय के रिश्तेदारों को बुलाकर यहां कारोबार कर रहे हैं। प्रदेश में गांव की अपेक्षा शहरों में एकाएक बढ़ौतरी हो गई है। शहर, गली, मोहल्लों में दर्जी, नाई, टायर पंक्चर लगाने वाले, होटल-ढाबा, टैक्सी-ऑटो, पलम्बर, फेरी वाले, मीट दुकान आदि कारोबार में यह समुदाय कार्य कर रहे हैं। इन प्रवासी लोगों का मक्कड़ज़ाल इतना फैल गया है कि बोली, भाषा और पहनावा अपने समुदाय का छोड़ कर साधारण प्रदेश के लोगों सा हो गया है, जहां इन्हें एकदम पहचानना मुश्किल है। इस शान्त प्रदेश में जहां मस्जिदों की संख्या बीस वर्ष पहले केवल नाम मात्र थी उनमें एकदम बढ़ौतरी होने के क्या मायने हैं? यह सारी खेल-गतिविधियां चुपचाप होना अपने आप में प्रश्नचिन्ह है। प्रदेश में मस्जिद विवादों की स्थिति उत्पन्न होने से प्रदेशवासियों की नींद खुली है। प्रदेशवासी इस बारे सोचने के लिए विवश हैं। इतिहास गवाह है कि जहां जयचन्दों ने मातृभूमि से गद्दारी की, वहां उनका नामोनिशान मिट गया। इसलिए अब समय आ गया है कि वक्त की नजाकत को समझे, अपने वोट-स्पोर्ट या चंद सिक्कों की खातिर ऐसे प्रवासियों को संरक्षण देकर अपनी मातृभूमि से गद्दारी कर कुछ भी हासिल न कर केवल विरासत में अपनी आने वाली पीढियों को चोरी-डकैती और असुरक्षित माहौल के सिवा कुछ न दे पायेंगे।

विमल के. रघुवंशी, कथलोह, जिला सोलन, हि.प्र.

महोदय,

यह वर्ष संघ की स्थापना का शताब्दी वर्ष होने के करण भारतीय परिवेश में सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस वर्ष जहां 100 वर्षों की संघर्षपूर्ण यात्रा की समीक्षा करके करते हुए उपलब्धियां का गौरव गाना करने का सौभाग्य प्राप्त होगा, वहीं वर्तमान स्थिति में विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए राष्ट्र निर्माण के योगदान को रेखांकित करते हुए भविष्य के भारत की भी धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से योजना बनाए जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इस संबंध में अनेक प्रयास किए जाने की योजनाएं की देखने में आ रही हैं। राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तर पर विभिन्न प्रकल्पों की गतिविधियों को आगे बढ़ाए जाने तथा संघ के विचार को घर-घर एवं जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प किया गया है। इस दृष्टि से प्रत्येक स्वयंसेवक को मातृभूमि के प्रति अपना दायित्व निभाने का भी अवसर है। हमें यह सौभाग्य मिला है कि हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की शताब्दी के विभिन्न आयोजनों के भागीदार बन रहे हैं। इसलिए तन मन धन से समर्पण करते हुए विभिन्न सेवा कार्यों को पूर्ण करके हम आने वाली पीढ़ी के लिए एक सुखद स्थिति का भी निर्माण करने में सफल हों और भारत के भविष्य को उज्जवल बनाने के इस महायज्ञ में हमें भी आहुति प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हो सके। मातृवंदना के माध्यम से प्रत्येक मासिक अंक में संघ की स्थापना, उपलब्धियां और योजनाओं के बारे में कुछ आलेख पढने को मिल रहे हैं, जो स्वयंसेवकों तथा सामान्य जनों का मार्गदर्शन करने के लिए एक चिंतन दृष्टि प्रदान करने में समर्थ साबित हो रहे हैं। इस पूरे वर्ष मातृवंदना पत्रिका के माध्यम से हमें और भी अच्छी सामग्री पढ़ने को मिलेगी जिसमें हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका का विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए ताकि संघ के इतिहास में हिमाचल प्रदेश की भी प्रभावशाली भूमिका और योगदान को रेखांकित किया जा सके।

रूपलाल ठाकुर, बंदला, जिला बिलासपुर, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को विजयादशमी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस अक्तूबर 2025

दुर्गा महा नवमी पूजा	01 अक्तूबर
विजयादशमी-गांधी जयंती	02 अक्तूबर
वाल्मीकि जयंती	07 अक्तूबर
करवा चौथ, संकष्टी चतुर्थी	10 अक्तूबर
धनतेरस, प्रदोष व्रत	18 अक्तूबर
दिवाली, कार्तिक अमावस्या	21 अक्तूबर
भाई दूज	23 अक्तूबर

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

संघ का संकल्प एक भारत, श्रेष्ठ भारत

विश्व में सर्वाधिक प्राचीन इतिहास एवं सनातनता से सम्पन्न धार्मिक साहित्य को समेटे हुए भारत एक राष्ट्र है। वैदिक मंत्रों में राष्ट्र शब्द का उल्लेख है 'आ राष्ट्रे राजन्य शूर:' मन्त्र में राजाओं के शूरवीर होने की ईश्वर से प्रार्थना इस राष्ट्र में की गई है। संघ प्रारम्भ से ही भारत को एक राष्ट्र मानता है। साथ ही यह स्वीकार करता है कि यह हिन्दू राष्ट्र है और इसके निर्माण और संवर्द्धन में हिन्दू समाज का ही सर्वाधिक योगदान रहा है। इस राष्ट्र का भाग्य और भविष्य हिन्दू समाज के भाग्य और भविष्य से निश्चित रूप से जुड़ा है। इसलिए हिन्दू समाज का सुसंगठित होना होना आवश्यक है। एकात्म भाव एवं राष्ट्रीय सद्गुणों से सम्पन्न हिन्दू समाज ही पुन: भारत को विश्वगुरु का सम्मान दिलाने में सक्षम होगा, ऐसा संघ का मानना है। धर्म की अधर्म पर और समाज की अन्याय पर विजय के प्रतीक विजयदशमी महोत्सव के पवित्र दिन पर प.पू. डॉ. हेडगेवार जी ने सन् 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी। आज तक की कालावधि पर्यन्त संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। संघ शताब्दी कार्यक्रमों की पूर्व भूमिका के रूप में 26,27,28 अगस्त 2025 को तीन दिवसीय व्याख्यान माला नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित की गई थी, जिसका विषय था '100 वर्ष की संघ यात्रा – नए क्षितिज'। व्याख्यान माला में संघ की अब तक की यात्रा तथा भविष्य में संघ और स्वयंसेवकों की भूमिका से सम्बद्ध विचारों को बौद्धिक जगत से जुड़ी हस्तियों के समक्ष प.पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

डॉ. भागवत जी ने शताब्दी संवाद संगोष्ठी के आयोजन का हेतु बताते हुए कहा कि समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में बहुत सी चर्चाएं चलती हैं किन्तु उन चर्चाओं में कम और अप्रमाणिक जानकारी उपलब्ध होती है। इसलिए सही जानकारी देना जरूरी है। उनका कहना था कि संघ एक कार्य पद्धति है। संघ 'शाखा' जैसी अद्वितीय प्रणाली से व्यक्ति निर्माण में संलग्न है। संघ कार्य शुद्ध सात्विक प्रेम और समाज निष्ठा पर आधारित है। यहाँ व्यक्तिगत लाभ नहीं अर्थात् यहां आकर कुछ मिलता नहीं, अपितु देना ही पड़ता है। संघ हिन्दुओं का संगठन है, लेकिन इसका अर्थ किसी दूसरे धर्म-सम्प्रदाय का विरोध होना नहीं। सभी भारतीयों का डीएनए एक ही है। सद्भावना से रहना हमारी संस्कृति है।

इन तीन दिनों की गोष्ठी में देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, खेल, कला, मीडिया और बौद्धिक जगत से जुड़ी 1300 से अधिक प्रमुख हस्तियों को आमंत्रित किया गया था। इस आयोजन में 26 प्रमुख देशों के राजदूतों के साथ अनेक देशों के उच्चायोगों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। मुस्लिम और ईसाई समाज की प्रमुख हस्तियों ने भी इस संगोष्ठी में भाग लिया।

डॉ. मोहन भागवत ने सभी संशयों का निराकरण करते हुए दुनिया की दशा-दिशा पर अपनी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि दुनिया में परिवर्तन लाने से पूर्व हमें अपने घर से समाज परिवर्तन की शुरूआत करनी होगी। इसलिए संघ ने 'पंच परिवर्तन' के माध्यम से परिवर्तन लाने का संकल्प लिया है। ये है पंच परिवर्तन:कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्व की पहचान तथा नागरिक कर्त्तव्यों का पालन।

उनका कहना था कि हर हाल में हमें अपने देश के लिए ही जीना है। संविधान और नियमों का पालन जरूरी है। शांतिप्रिय आंदोलन हो सकते हैं, किन्तु उपद्रव करना और राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना उचित नहीं। संघ के विविध क्षेत्रों एवं विषयों से जुड़े दृष्टिकोण से सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने बौद्धिक जगत को अवगत कराया।

डॉ. मोहन भागवत जी के 75वें जन्मदिवस पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने उद्‌गार लेख के माध्यम से प्रकट किये हैं। उन्होंने भागवत जी के परिवार से आत्मीय सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए उनकी प्रशंसा में सारगर्भित बातें कही हैं। उनका कहना है कि मोहन भागवत जी ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मंत्र पर चलते हुए समाज को संगठित करने, समता, समरसता और बंधुत्व की भावना को सशक्त करने में अपना पूर्ण जीवन समर्पित किया है। समाज के लिए निरत कार्यरत रहते हुए उन्होंने राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान की है। वह युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत है। आधुनिक टैक्नोलॉजी के उपयोग के लिए वैश्विक-चुनौतियों और वैश्विक विचारों को प्राथमिकता देते हुए व्यवस्थाओं को विकसित करने में सहयोग देते हैं। समाज कल्याण और के राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए पंच- परिवर्तन का मार्ग सुनिश्चित किया है। यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में और प.पू. सरसंघचालक द्वारा अन्वेषित एवं संकल्पित पंच परिवर्तन का अनुपालन एवं अनुसरण करते हुए भारत शीघ्र ही विकसित देश बनेगा, ऐसा भारतीय जनमानस का विश्वास है।

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज में चल रही गतिविधियों को दर्शाता है और समाज की वास्तविक तस्वीर पेश करता है। इसलिए इसे समाज का आईना माना जाता है। वहीं इतिहास मनुष्य के बीते कल का अध्ययन है जिसमें कालानुक्रमिक क्रम में घटित घटनाओं, विचारों और परिवर्तनों का वर्णन मिलता है, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक पहलुओं को शामिल किया जाता है। इतिहास अतीत की घटनाओं को समझने, उनके कारणों और परिणामों की व्याख्या करने तथा वर्तमान और भविष्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। जहाँ इतिहास तथ्यात्मक होता है, वहीं साहित्य भावनात्मक होता है। आज हमारे देश में पाश्चात्य और भारतीय इतिहास लेखन को लेकर तनाव का माहौल बना हुआ है। इसका मुख्य कारण है इतिहासकारों का संकीर्ण और एकांगी दृष्टिकोण। पाश्चात्य इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को निष्पक्ष रूप से न लिखते हुए पक्षपातपूर्ण तरीके से लिखा है। तमिल और संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषाएं हैं जिनमें आज भी साहित्य की रचना हो रही है। इन भाषाओं के साहित्य में भारतीय संस्कृति के इतिहास की महानता की झलक पाई जा सकती है।

मैंने एन.आई.टी. हमीरपुर में आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में भारतीय इतिहास को दोबारा लिखने पर चर्चा हुई। इतिहासकारों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास को लिखा है। चर्चा का विषय यह था कि पाश्चात्य इतिहासकारों ने भारतीय संस्कृति को निकृष्ट और पाश्चात्य संस्कृति को उत्कृष्ट सिद्ध करने के लिए इतिहास लेखन में तथ्यों से छेड़छाड़ की है। लेकिन भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कविताओं और कहानियों में भारतीय संस्कृति की महता दिखाने वाले तथ्यों का रमणीय वर्णन किया है। वहीं से मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा मिली। हर व्यक्ति का अपना अलग दृष्टिकोण होता है। वह उसी चश्मे से संसार को देखता है। बच्चों का अपना कोई दृष्टिकोण नहीं होता। वे निष्पक्ष रूप से संसार को देखते हैं। इसलिए कहा भी जाता है कि बच्चे मन के सच्चे। सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में व्यक्ति किसी भी विषय के बारे में, चाहे वह इतिहास हो या साहित्य, इंटरनेट पर असंख्य जानकारियां प्राप्त कर सकता है। इससे वह किसी वस्तु के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्धारित कर सकता है। वह किसी भी विचारधारा को मानने के लिए स्वतंत्र है। स्कूल जाने वाले बच्चे पूरा दिन मोबाइल हाथ में पकड़े चाहे कितनी भी अपनी आंखें खराब करते हों परंतु वे इंटरनेट पर उपलब्ध असीम जानकारियों से फायदा उठाने में इतने सक्षम नहीं हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए वे अपने शिक्षकों और पाठ्य पुस्तकों की तरफ ही देखते हैं। शिक्षक द्वारा कही गई बात उनके लिए आप्त वाक्य है। वे इसे बिना तथ्यों से परखे आत्मसात कर लेते हैं। इसलिए जरूरी हो जाता है कि पाठ्यक्रम में सम्मिलित जानकारी और इतिहास किसी पूर्वाग्रह और पक्षपात से रहित हो। लेकिन ऐसा नहीं है। कुछ पाठ्यपुस्तकों में लिखित इतिहास विद्यार्थी को भारतीय संस्कृति के प्रति गौरवान्वित करने की जगह अपनी संस्कृति के प्रति हीन भावना का शिकार बना देता है। उदाहरण के लिए इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में झांसी की रानी की वीरता का वर्णन नहीं किया गया है। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' कविता लिखकर लक्ष्मी बाई को इतिहास में वह स्थान दिलाया, जिससे प्रत्येक भारतीय नारी गौरन्वित महसूस करती है। कुछ इतिहासकारों ने तो ऐसे लिखा है कि मैकाले ने ही हमें पढना-लिखना सिखाया, नहीं तो चाणक्य, आर्यभट्ट, पाणिनी, कालिदास के देश के लोग तो अनपढ़ थे। इतिहासकारों द्वारा लिखे गए निष्पक्ष इतिहास को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। आज जहां भारत और अमरीका के बीच टैरिफ युद्ध चल रहा है उसके बीच अमरीकियों द्वारा रूस-यूक्रेन युद्ध को 'मोदी युद्ध' कहना और कहना कि भारतीय ब्राह्मण रूस से तेल खरीद कर भारी मुनाफा कमा रहे हैं और यूक्रेन को स्वयं द्वारा दिए जाने वाले विध्वंसक हथियारों और वित्तीय सहायता पर मौन रहना इतिहास लेखन के पक्षपातपूर्ण रवैये का उदाहरण है। अपने ही देश के मूल निवासियों का नरसंहार करने वाला और वियतनाम युद्ध में रासायनिक हथियारों से कत्लेआम करने वाला अमरीका ; इतिहास लेखन में छेड़छाड़ कर स्वयं को मानवता का मसीहा दिखाना चाहता है। अमरीका की काली करतूतों का पाश्चात्य साहित्यकारों ने विस्तृत वर्णन किया है। जिसे इतिहास में दफन करने की कोशिश की गई, साहित्यकारों ने उसे जमीन से उठाकर आकाश में सुशोभित कर दिया। साहित्य और इतिहास किसी भी राष्ट्र और संस्कृति की अमूल्य धरोहर होते हैं। जरूरत होती है इन्हें निष्पक्ष रूप से लिखने की। ◆◆◆

कालिदास और सरस्वती

कालिदास और सरस्वती महान कवि कालिदास एकांत में घूमने निकले हुए थे। काफी देर तक चलते हुए उन्हें प्यास लगी। संयोग से उन्हें उसी रास्ते के किनारे एक कुआं दिखाई दिया, जहां एक महिला पानी भर रही थी। वे तुरंत उस कुएं के पास पहुंचे और पानी भर रही महिला से उन्हें पानी पिलाकर प्यास बुझाने के लिए प्रार्थना की।

स्त्री बोली : बेटा मैं तुम्हें जानती नहीं. अपना परिचय तो दो। फिर मैं अवश्य पानी पिला दूंगी।

कालिदास ने कहा – मैं पथिक हूँ, यहां से गुजर रहा था प्यास लगी आपको पानी भरते हुए देखा तो सोचा क्यों ना यहीं पर पानी पीकर प्यास बुझा लूं। कृपया पानी पिला दें।

स्त्री बोली : तुम पथिक कैसे हो सकते हो, पथिक तो केवल दो ही हैं सूर्य व चन्द्रमा, जो कभी रुकते नहीं, हमेशा चलते रहते हैं। तुम इनमें से कौन पथिक हो, सत्य बताओ।

कालिदास ने कहा : मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें।

स्त्री बोली : तुम मेहमान कैसे हो सकते हो ? संसार में दो ही मेहमान हैं। पहला धन और दूसरा यौवन। यह बिना बताए आते हैं और अपनी मर्जी से चले जाते हैं। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम ?

कालिदास बोले : मैं सहनशील हूं। अब आप पानी पिला दें। आपकी बातों का जवाब भी दे रहा हूं।

स्त्री ने फिर कहा : नहीं, सहनशील तो दो ही हैं। पहली, धरती जो पापी–पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है। उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार भर देती है, दूसरे ये पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं हो। इतिहास के मारे क्रोध करने लगे हो। सच बताओ तुम कौन हो ?

कालिदास बोले : मैं हठी हूँ।

स्त्री बोली : फिर असत्य बोला। हठी तो दो ही हैं– पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार–बार निकल आते हैं। सत्य कहें, ब्राह्मण कौन हैं आप ?

कालिदास ने कहा : फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।

स्त्री ने कहा : नहीं तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो।

मूर्ख दो ही हैं। पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है, और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए ग़लत बात पर भी तर्क देकर उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है। अब कालिदास की परीक्षा पूरी हो चुकी थी।

तभी वृद्धा ने कहा : उठो वत्स ! आवाज़ सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात् माता सरस्वती वहां खड़ी थी, कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए)

माता ने कहा : शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा।

कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े। अब कालिदास ने यह प्रण कर लिया कि वे कभी भी अहंकार नहीं करेंगे और जो कुछ भी ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ है उसे वह अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। ◆◆◆

संघ की 100 साल की यात्रा में भागवत जी का कार्यकाल सर्वाधिक परिवर्तन का कालखंड

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के प्रबल पक्षधर हैं संघ प्रमुख

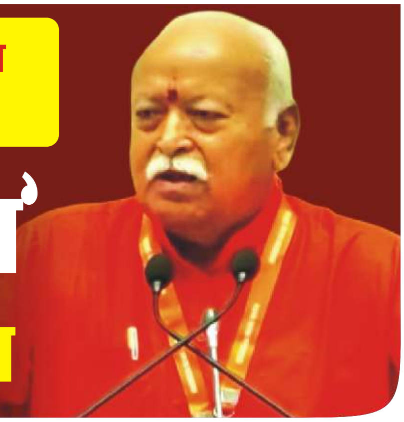

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

11 सितंबर का दिन अलग-अलग स्मृतियों से जुड़ा है। एक स्मृति 1893 की है, जब स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्वबंधुत्व का संदेश दिया और दूसरी स्मृति है 9/11 का आतंकी हमला, जब विश्व बंधुत्व को सबसे बड़ी चोट पहुंचाई गई। इस दिन की एक और विशेष बात है। यह एक ऐसे व्यक्तित्व का 75वां जन्मदिवस है जिन्होंने वसुधैव कुटुंबकम् के मंत्र पर चलते हुए समाज को संगठित करने, समता-समरसता और बंधुत्व की भावना को सशक्त करने में अपना पूरा जीवन समर्पित किया है। संघ परिवार में जिन्हें परम पूजनीय सरसंघचालक के रूप में श्रद्धाभाव से संबोधित किया जाता है, ऐसे आदरणीय मोहन भागवत जी का आज जन्मदिन है।

परिवार से गहरा संबंध: यह एक सुखद संयोग है कि इसी साल संघ अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। मैं भागवत जी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उन्हें दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें। मेरा उनके परिवार से बहुत गहरा संबंध रहा है। मुझे उनके पिता, स्वर्गीय मधुकरराव भागवत जी के साथ निकटता से काम करने का सौभाग्य मिला था। मैंने अपनी पुस्तक ज्योतिपुंज में मधुकरराव जी के बारे में विस्तार से लिखा भी है। वकालत के साथ-साथ मधुकरराव जी जीवनभर राष्ट्र निर्माण के कार्य में समर्पित रहे। अपनी युवावस्था में उन्होंने लंबा समय गुजरात में बिताया और संघ कार्य की मजबूत नींव रखी।

सत्तर के दशक में बने प्रचारक: मधुकर राव जी का राष्ट्र निर्माण के प्रति झुकाव इतना प्रबल था कि अपने पुत्र मोहनराव को भी इस महान कार्य के लिए निरंतर गढ़ते रहे। पारसमणि मधुकर राव ने मोहनराव के रूप में एक और पारसमणि तैयार कर दी। भागवत जी का पूरा जीवन सतत प्रेरणा देने वाला रहा है। वह 1970 के दशक के मध्य में प्रचारक बने। सामान्य जीवन में प्रचारक शब्द सुनकर भ्रम हो जाता है कि कोई प्रचार करने वाला व्यक्ति होगा, लेकिन जो संघ को जानते हैं उनको पता है कि प्रचारक परंपरा संघ कार्य की विशेषता है। गत 100 वर्षों में देशभक्ति की प्रेरणा से भरे हजारों युवक-युवतियों ने अपना घर-परिवार त्याग करके पूरा जीवन संघ परिवार के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया है। भागवत जी भी उस महान परंपरा की मजबूत धुरी हैं।

समाज के लिए किया काम: भागवत जी ने उस समय प्रचारक का दायित्व संभाला, जब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने देश पर इमरजेंसी थोप दी थी। उस दौर में प्रचारक के रूप में भागवत जी ने आपातकाल-विरोधी आंदोलन को निरंतर मजबूती दी। उन्होंने कई वर्षों तक महाराष्ट्र के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों, विशेषकर विदर्भ में काम किया। 1990 के दशक में अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख के रूप में मोहन भागवत जी के कार्यों को आज भी कई स्वयंसेवक स्नेहपूर्वक याद करते हैं। इसी कालखंड में मोहन भागवत जी ने बिहार के गांवों में अपने जीवन के अमूल्य वर्ष बिताए और समाज को सशक्त करने के कार्य में समर्पित रहे।

राष्ट्र प्रथम की विचारधारा: 20वीं सदी के आखिरी पड़ाव पर वह अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख बने। वर्ष 2000 में वह सरकार्यवाह बने और यहां भी भागवत जी ने अपनी अनोखी कार्यशैली से हर कठिन परिस्थिति को सहजता और सटीकता से संभाला। 2009 में वह सरसंघचालक बने और आज भी अत्यंत ऊर्जा के साथ कार्य कर रहे हैं। भागवत जी ने राष्ट्र प्रथम की मूल विचारधारा को हमेशा सर्वोपरि रखा।

राष्ट्र को दिशा दी: सरसंघचालक होना मात्र एक संगठनात्मक जिम्मेदारी नहीं है। यह एक पवित्र विश्वास है, जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी दूरदर्शी व्यक्तित्वों ने आगे बढ़ाया है और इस राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पथ को दिशा दी है। असाधारण व्यक्तियों ने इस भूमिका को व्यक्तिगत त्याग, उद्देश्य की स्पष्टता और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण के साथ निभाया है। यह गर्व की बात है कि

भागवत जी ने न केवल इस विशाल जिम्मेदारी के साथ पूर्ण न्याय किया है, बल्कि इसमें अपनी व्यक्तिगत शक्ति, बौद्धिक गहराई और सहृदय नेतृत्व भी जोड़ा है।

युवाओं की प्रेरणा: भागवत जी का युवाओं से सहज जुड़ाव है और इसलिए उन्होंने अधिक से अधिक युवाओं को संघ कार्य के लिए प्रेरित किया है। वह लोगों से प्रत्यक्ष संपर्क में रहते हैं और संवाद करते रहते हैं। श्रेष्ठ कार्य पद्धति को अपनाने की इच्छा और बदलते समय के प्रति खुला मन रखना, ये मोहनजी की बहुत बड़ी विशेषता रही है। अगर हम व्यापक संदर्भ में देखते हैं तो संघ की 100 साल की यात्रा में भागवत जी का कार्यकाल संघ में सर्वाधिक परिवर्तन का कालखंड माना जाएगा। चाहे वह गणवेश परिवर्तन हो, संघ शिक्षा वर्गों में बदलाव हो, ऐसे अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन उनके निर्देशन में संपन्न हुए।

टेक्नोलॉजी का उपयोग: कोरोना काल में मोहन भागवत जी के प्रयास विशेष रूप से याद आते हैं। उस कठिन समय में उन्होंने स्वयंसेवकों को सुरक्षित रहते हुए समाजसेवा करने की दिशा दी और टेक्नॉलजी का उपयोग बढ़ाने पर बल दिया। उनके मार्गदर्शन में स्वयंसेवकों ने जरूरतमंदों तक हरसंभव सहायता पहुंचाई, जगह-जगह मेडिकल कैंप लगाए। उन्होंने वैश्विक चुनौतियों और वैश्विक विचार को प्राथमिकता देते हुए व्यवस्थाओं को विकसित किया। हमें कई स्वयंसेवकों को खोना भी पड़ा, लेकिन भागवत जी की प्रेरणा ऐसी थी कि अन्य स्वयंसेवकों की दृढ़ इच्छाशक्ति कमजोर नहीं पड़ी। इस वर्ष की शुरुआत में नागपुर में उनके साथ माधव नेत्र चिकित्सालय के उद्घाटन के दौरान मैंने कहा था कि संघ अक्षयवट की तरह है, जो राष्ट्रीय संस्कृति और चेतना को ऊर्जा देता है। इस अक्षयवट वृक्ष की जड़ें इसके मूल्यों की वजह से बहुत गहरी और मजबूत हैं। इन मूल्यों को आगे बढ़ाने में जिस समर्पण से भागवत जी जुटे हुए हैं, वह हर किसी को प्रेरणा देता है।

पंच परिवर्तन का मार्ग: समाज कल्याण के लिए संघ की शक्ति के निरंतर उपयोग पर भागवत जी का विशेष बल रहा है। इसके लिए उन्होंने पंच परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। इसमें स्वबोध, सामाजिक समरसता, नागरिक शिष्टाचार, कुटुम्ब प्रबोधन और पर्यावरण के सूत्रों पर चलते हुए राष्ट्र निर्माण को प्राथमिकता दी गई है। देश और समाज के लिए सोचने वाले हर भारतवासी को पंच परिवर्तन के इन सूत्रों से अवश्य प्रेरणा मिलेगी। संघ का हर कार्यकर्ता वैभव संपन्न भारत माता का सपना साकार होते देखना चाहता है। इस सपने को पूरा करने के लिए जिस स्पष्ट विज़न और ठोस एक्शन की जरूरत होती है, मोहन जी इन दोनों गुणों से परिपूर्ण हैं। मोहन जी के स्वभाव की एक और बड़ी विशेषता है कि वह मृदुभाषी हैं। उनमें सुनने की भी अद्भुत क्षमता है। यह विशेषता न केवल उनके दृष्टिकोण को गहराई देती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व और नेतृत्व में संवेदनशीलता और गरिमा भी लाती है।

संगीत और गायन में रुचि: मोहन जी, हमेशा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के प्रबल पक्षधर रहे हैं। भारत की विविधता और भारत भूमि की शोभा बढ़ा रही अनेक संस्कृतियों और परंपराओं के उत्सव में भागवत जी पूरे उत्साह से शामिल होते हैं। वैसे बहुत कम लोगों को पता है कि भागवत जी व्यस्तता के बीच संगीत और गायन में भी रुचि रखते हैं। वह विभिन्न भारतीय वाद्ययंत्रों में भी निपुण हैं। पठन-पाठन में उनकी रुचि, उनके अनेक भाषणों और संवादों में साफ दिखाई देती है।

आत्मनिर्भर भारत पर जोर: पिछले दिनों देश में जितने सफल जन-आंदोलन हुए चाहे स्वच्छ भारत मिशन हो या बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, भागवत जी ने पूरे संघ परिवार को इन आंदोलनों में ऊर्जा भरने के लिए प्रेरित किया। मैं पर्यावरण से जुड़े प्रयासों और सस्टेनेबल लाइफस्टाइल को आगे बढ़ाने के प्रति उनके समर्पण को जानता हूं। मोहन जी का बहुत जोर आत्मनिर्भर भारत पर भी है। कुछ ही दिनों में विजयादशमी पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 वर्ष का हो जाएगा। यह भी सुखद संयोग है कि विजयादशमी का पर्व, गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री की जयंती और संघ का शताब्दी वर्ष एक ही दिन आ रहे हैं।

ऐतिहासिक अवसर: यह भारत और विश्वभर के लाखों स्वयंसेवकों के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। हम स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमारे पास भागवत जी जैसे दूरदर्शी और परिश्रमी सरसंघचालक हैं, जो ऐसे समय में संगठन का नेतृत्व कर रहे हैं। एक युवा स्वयंसेवक से लेकर सरसंघचालक तक की उनकी जीवन यात्रा उनकी निष्ठा और वैचारिक दृढ़ता को दर्शाती है। विचार के प्रति पूर्ण समर्पण और व्यवस्थाओं में समयानुकूल परिवर्तन करते हुए उनके नेतृत्व में संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है।

मैं मां भारती की सेवा में समर्पित भागवत जी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की पुनः कामना करता हूं। उन्हें जन्मदिवस पर अनेकानेक शुभकामनाएं।

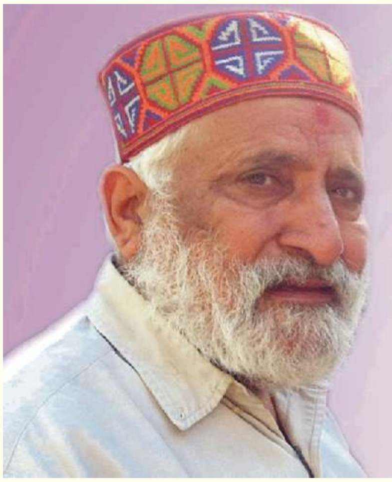

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष

कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
वरिष्ठ स्तम्भकार

इस प्रकार 1925 तक आते-आते देश भर में कुल मिला कर अनेक संगठन देश को अंग्रेजों से मुक्त करवाने के लिए संघर्षशील थे। लेकिन हिन्दुस्तान की मुक्ति का मूल मंत्र था हिन्दुस्तान की मूल अवधारणा को, उस पर छा गई काई को हटा कर पुन: स्थापित करना। बाकी संगठन भारत की अवधारणा पर जमी काई को, जो अंग्रेज तेजी से बिछा रहे थे, हटाने की चिंता नहीं कर रहे थे। बल्कि उसी काई को ही भारत स्वीकार करने को तैयार थे। डा. हेडगेवार उस काई को हटाने के प्रयास में जुटे। ऊंच-नीच की बीमारी के कारण कमजोर हो गई भारत की रक्त धमनियों को सशक्त करने के लिए ऊंच-नीच की कमियों को समाप्त करने के लिए व्यावहारिक पद्धति को क्रियाशील करने में लगे। यही काम अपने तरीके से डा. अंबेडकर कर रहे थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी यात्रा के सौ साल पूरे कर लिए हैं। संघ की स्थापना महाराष्ट्र के एक डाक्टर (चिकित्सक) केशव राव बलिराम हेडगेवार (1889-1940) ने की थी। जिस वक्त डा. हेडगेवार ने संघ की स्थापना की उस समय उनकी उम्र 35 साल थी। हेडगेवार परिवार मूलत: महाराष्ट्र का नहीं था बल्कि विन्ध्याचल के पार दक्षिण क्षेत्र से ताल्लुक रखता था। पूर्वज कभी महाराष्ट्र में आकर बस गए थे। जिन दिनों हेडगेवार का जन्म हुआ, उससे कुछ वर्ष पहले हिंदुस्तान आजादी की पहली लड़ाई (1857) हार चुका था। इसके साथ ही मुगल सत्ता का अंतिम शासक बहादुरशाह जफर भी सत्ताविहीन होकर जलावतन हो चुका था। मुगल सत्ता तो खत्म हुई लेकिन लाल किले पर भारतीय ध्वज के स्थान पर यूनियन जैक आ गया था। एक गुलामी के बाद दूसरी गुलामी पुख्ता हो गई थी। यह गुलामी पहली गुलामी से भी बदतर होने वाली थी। जिस वक्त मुगल गुलामी की शुरुआत हुई थी, उस वक्त भी हिंदुस्तान अलग अलग रियासतों में बंटा होने के कारण गुलाम हुआ था। पोरस जब सिकन्दर का मुकाबला कर रहा था, तो आसपास के राजा तमाशा देख रहे थे। मुगलों ने भारत की राष्ट्रीयता को खंडित कर यहां की संस्कृति का अरबीकरण-तुर्कीकरण करने का प्रयास किया था। गुरु नानक देव जी ने तब भी चेतावनी दी थी, यह मत समझो कि हमला तो एक राजा पर हुआ है, दूसरा बच जाएगा।

उन्होंने तब भी हिन्दुस्तान की अवधारणा को चिन्हित करते हुए स्पष्ट किया था, मुगल किसी एक राजा को नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान को डराने का प्रयास करेंगे। हिन्दुस्तान की इस एकात्म अवधारणा को आत्मसात करने के लिए गुरु नानकदेव जी ने पूरे पच्चीस साल देश के कोने कोने से साक्षात्कार किया था। गुरु नानक देव जी ने देश की इस गुलामी के दो ऐसे कारण गिनाए थे, जिसकी ओर आज तक किसी का ध्यान नहीं गया था। उनका कहना था, इस गुलामी का एक बड़ा कारण था कि क्षत्रियों ने अपना धर्म छोड़ दिया है और उन्होंने अपनी भाषा छोड़ कर 'मलेच्छ' भाषा ग्रहण कर ली है। यह बहुत महत्वपूर्ण बात थी। धर्म छोडने् का अर्थ यह नहीं था कि पूजा-पाठ करना बंद कर दिया था। पूजा-पाठ का धर्म से कुछ लेना देना नहीं है। धर्म का अर्थ कर्त्तव्य होता है। क्षत्रिय का धर्म देश की रक्षा करना है। उनमें से कुछ ने अपना यह धर्म छोड़ कर हमलावर के साथ ही मिल जाना शुरू कर दिया। भाषा राष्ट्र की आत्मा होती है। गुरु नानक देव जी ने ऊंच-नीच, भेदभाव, छूतछात की खाईओं से बाहर निकलने के लिए देशवासियों को प्रेरित किया था। देश के अन्य हिस्सों में भी ऐसे प्रयास हुए ही। इन्हीं प्रयासों का परिणाम था कि मुगलों के तीन सौ साल के शासन में देश निरंतर इन विदेशी मुगल शासकों से जूझता रहा। लेकिन दुर्भाग्य से मुगल

शासन के अंत के बाद देश में 'स्वराज' स्थापित नहीं हुआ, बल्कि देश ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के शिकंजे में फंस गया। ये गोरे अंग्रेज मुगलों से भी कहीं ज्यादा शातिर और अमानवीय थे। अब देश को इनसे लड़ना था। गुरु नानक देव जी ने भाषा को लेकर जो संकेत किया था, वह और गहरा हो गया था। अंग्रेज भाषा की महत्ता को मुगलों से कहीं ज्यादा समझते थे।

वे जानते थे कि भारत राष्ट्र की अवधारणा को सोख लेना है तो भारतीय भाषाओं को समाप्त करो। यदि यह संभव नहीं है तो अपनी मलेच्छ भाषा के माध्यम से उनके मस्तिष्क और चिंतन पर नियंत्रण स्थापित करो। देश और शासन की सत्ता इस प्रकार के नियंत्रित 'रोबोटों' के हाथ में दो। 1857 के तुरंत बाद 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई थी। 1902 में बंगाल में अनुशीलन समिति का गठन हुआ। 1905 में मुस्लिम लीग गठित हो गई थी। 1913 में गदर पार्टी की गतिविधियां शुरू हुई। 1915 में हिंदू महासभा अस्तित्व में आई। लेकिन इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में एक और व्यक्ति की चर्चा होने लगी थी। वे थे भीमराव रामजी अंबेडकर (1891-1956)। अंबेडकर महार समाज से थे और 1912 में मुंबई विश्वविद्यालय से बीए पास कर वे रियासती वज़ीफा पर अमेरिका में एमए के लिए वहां चले गए थे। राष्ट्रीय प्रश्नों पर अंबेडकर भी स्कूल के दिनों से ही जूझने लगे थे, लेकिन अमेरिका से आने के बाद उनकी धार तीखी हो गई थी। उनके इर्द-गिर्द भी एक संगठन निर्मित होने लगा था। इसी कालखंड तक आते-आते भारत में कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भी सक्रिय होने लगे थे। दिसंबर 1925 में उन्होंने एकत्रित होकर कानपुर में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया का गठन कर लिया था। 1925 में ही दशहरे के अवसर पर डा. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गठन किया था।

1925 में डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना इस उद्देश्य से की कि भारत की मूल अवधारणा, जो गुलामी और ऊंच-नीच की काई से ढक गई थी, पुनः जीवित हो सके। उन्होंने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और आत्मगौरव का संदेश दिया। सौ वर्षों की यात्रा के बाद संघ भारतीयता का केन्द्र बिंदु बन चुका है, जबकि कृत्रिम अवधारणा पर आधारित राजनीतिक शक्तियां क्षीण हो रही हैं। यह भारत की निरंतरता और जागरण का प्रतीक है।

भूगोल के लोग नागपुर को भारत का केन्द्र भी मानते हैं। नागपुर नाग समाज का केन्द्र भी माना जाता है। लेकिन संघ स्थापना से पूर्व डा. हेडगेवार कांग्रेस व अनुशीलन समिति संगठनों की यात्रा कर आए थे। इस प्रकार 1925 तक आते-आते देश भर में कुल मिला कर अनेक संगठन देश को अंग्रेजों से मुक्त करवाने के लिए संघर्षशील थे। लेकिन हिन्दुस्तान की मुक्ति का मूल मंत्र था हिन्दुस्तान की मूल अवधारणा को, उस पर छा गई काई को हटा कर पुन: स्थापित करना। बाकी संगठन भारत की अवधारणा पर जमी काई को, जो अंग्रेज तेजी से बिछा रहे थे, हटाने की चिंता नहीं कर रहे थे। बल्कि उसी काई को ही भारत स्वीकार करने को तैयार थे। डा. हेडगेवार उस काई को हटाने के प्रयास में जुटे। ऊंच-नीच की बीमारी के कारण कमजोर हो गई भारत की रक्त धमनियों को सशक्त करने के लिए ऊंच-नीच की कमियों को समाप्त करने के लिए व्यावहारिक पद्धति को क्रियाशील करने में लगे। यही काम अपने तरीके से डा. अंबेडकर कर रहे थे। हैरानी की बात है कि कांग्रेस ने दोनों को ही ब्रिटिश एजेंट कहना शुरू कर दिया। आज सौ साल बाद जब हम लेखा-जोखा करते हैं तो भारत की ही अवधारणा को नकारने वाली कम्युनिस्ट पार्टियां देश में से लुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई भारत की कृत्रिम अवधारणा को अब तक ढोते हांफ रही कांग्रेस देशी-विदेशी तमाम प्रकार की ताकतों के सहयोग के बाद भी अवसान की ओर है। संघ की भारतीय अवधारणा आज केन्द्र बिन्दु में है। बाबा साहिब अंबेडकर को भारत रत्न देकर, कांग्रेस के तमाम षड्यंत्रों का उत्तर दे दिया है। यह संयोग ही कहा जाए या नियति कि डा. हेडगेवार ने जिस नव प्रयोग की शुरुआत नागपुर से की, उसी प्रयोग के दूसरे चरण की शुरुआत डा. अंबेडकर ने 1956 में तथागत बुद्ध के वचनों का स्मरण करके की। यही भारत की अवधारणा की निरंतरता है। सौ साल की यात्रा का पुण्य स्मरण। भारत हमेशा तरक्की की राह पर आगे बढ़ता रहे, उसकी एकता हमेशा कायम रहे, यही कामना ईश्वर से है।◆◆◆

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक शताब्दी की स्वर्णिम यात्रा

– ऋषि कुमार भारद्वाज

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में विभिन्न उपलब्धियां को हासिल करने का गौरव रखता है। अत्यंत सीमित संसाधनों में स्वयंसेवकों ने तन मन धन समर्पित करते हुए अपने समाज, राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण के लिए सुदृढ़ कर्तव्यनिष्ठा एवं निष्काम भावना से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना गौरवशाली योगदान प्रदान करके अपने दायित्व का निर्वहन किया है, वह आज विश्व समुदाय के लिए आदर्श बन चुका है। यही कारण है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से आज कौन परिचित नहीं है। डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के मार्गदर्शन में नागपुर के मोहिते का बाड़ा स्थल पर 8 से 10 बालकों की सभा से शुरू हुआ संघ आज अपने 100 वर्ष में विराट रूप ले चुका है। संगठन से प्रारम्भ हुआ एक पौधा समर्पण, देशभक्ति, श्रद्धा, व्यवहार और नियमितता से राष्ट्र प्रथम का वटवृक्ष बन गया है। 'राष्ट्र प्रथम' के ध्येय को साकार रूप देने के लिए चरैवेति-चरैवेति का मूल मंत्र संघ की वैचारिक यात्रा का केंद्र बिंदु रहा है। संघ अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है, और हमें इसका साक्षी होने का गौरव प्राप्त हो रहा है।

डॉ. हेडगेवार का विचार था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्राता ही भारत को पूर्णरूपेण स्वतंत्रा नहीं बना सकती, जब तक कि समाज का संगठनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनरुत्थान न हो। समाज को संगठित और सशक्त करने के लिए एक दीर्घकालिक और अनुशासित स्वयंसेवकों की आवश्यकता थी, जिसे डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के माध्यम से साकार रूप देने का प्रयत्न किया। संघ की शुरुआत बहुत ही छोटे स्तर पर हुई थी। हेडगेवार ने कुछ युवा लोगों को संगठित किया और उन्हें राष्ट्र सेवा, अनुशासन और संगठन के सिद्धांतों से प्रेरित किया। संघ का लक्ष्य व्यक्ति निर्माण है। संघ की शाखाएँ इसके लिए प्रशिक्षण का केंद्र हैं, जहाँ हर स्वयंसेवक को राष्ट्रहित में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया जाता है। प्रारंभिक शाखाओं में शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक चर्चाएँ और राष्ट्रभक्ति की शिक्षा दी जाती थी। भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनने के लिए समाज के सभी वर्गों के बीच समरसता और एकता की आवश्यकता है। इसी विचार के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कार्य करना शुरू किया और धीरे-धीरे यह संगठन पूरे भारत में अपनी शाखाओं के माध्यम से फैलने लगा। शाखा संघ की पहली और अहम् ईकाई है। संघ में व्यक्ति नहीं, संगठन महत्वपूर्ण है। व्यक्ति में विकार आ सकता है इसलिए भारत के राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक परम पवित्रा भगवा ध्वज को गुरु के रूप में स्वीकार किया गया।

सन् 1940 में 15 वर्ष का संघ कार्य, डॉ. हेडगेवार के 50 वर्ष भारत की शक्ति ऊर्जा का अक्षय भण्डार में सृजित हो गया। डॉ. हेडगेवार योग्य हाथों में (श्रीगुरुजी) संघ की कमान थमाकर तथा उन्हें आगे की रचना करने का कार्य सौंप कर स्वयं पंचतत्व में विलीन हो गए। संघ के दूसरे सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (गुरुजी) का कार्यकाल संघ के लिए विस्तार और विचारधारा के सुदृढ़ बनाने का समय था। उन्होंने संघ को न केवल संगठनात्मक रूप से बल्कि वैचारिक रूप से भी सशक्त बनाया। गुरुजी का मानना था कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी जड़ें उसकी प्राचीन सभ्यता और मूल्यों में हैं। सभी सर्व संघ चालकों के चिंतन मार्गदर्शन प्रेरणा एवं आदर्श से संघ ने विगत 100 वर्षों में शिक्षा समाज सेवा और राष्ट्र के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यही परंपरा आज भी परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर अग्रसर हो रही है

स्वयंसेवकों ने कई अनुषांगिक संस्थाओं की स्थापना की। इनमें राष्ट्र सेविका समिति (1936), अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (1949), भारतीय जनसंघ/भारतीय जनता पार्टी (1951), वनवासी कल्याण आश्रम (1952), विद्या भारती (1952) भारतीय मजदूर संघ (1955), विश्व हिन्दू परिषद (1964) आदि प्रमुख हैं। आज ऐसे 50 से अधिक संगठन है। यद्यपि इनके संविधान, कोष, पदाधिकारी, कार्यक्रम आदि अलग हैं परन्तु ध्येय प्रेरणा संघ की ही है। शताब्दी वर्ष पर सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता तथा नागरिक कर्तव्य संघ के पंच परिवर्तन लक्ष्य हैं। संघ ने अपने मूल वैचारिक अधिष्ठान से कभी समझौता नहीं किया और सदैव सामाजिक सौहार्द की दिशा में कार्य किया। संघ का उद्देश्य भारत को एक सशक्त, संगठित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना है। 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' से लेकर 'परम वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' की इस अविराम यात्रा में अभी अनेक पड़ाव बाकी हैं। बस आवश्यकता है समर्पण, सेवा और संगठन की, जिसकी साधना से संघ यात्रा के सौ वर्ष, इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होंगे और विश्व समुदाय का वैचारिक तौर पर मार्गदर्शन करेंगे।◆◆◆

मंडी की अंजली ठाकुर ने रचा इतिहास

वर्ल्ड पैरा बोशिया चैलेंजर गेम्स में जीता कांस्य पदक

हौंसले बुलंद हों, तो कठिन से कठिन रास्ते भी आसान हो जाते हैं। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले की बेटी अंजली ठाकुर ने इसी सच को एक बार फिर दुनिया के सामने साबित कर दिखाया है। कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में आयोजित वर्ल्ड पैरा बोशिया चैलेंजर गेम्स 2025 में अंजली ने देश के लिए कांस्य पदक जीतकर भारत का परचम लहराया।

अंजली ने अपने साथी खिलाड़ी अजय के साथ मिक्स्ड डबल्स कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन करते हुए सऊदी अरब की टीम को 7–1 के बड़े अंतर से हराया। यह जीत न केवल एक पदक है, बल्कि उन लाखों दिव्यांगजनों के लिए उम्मीद और प्रेरणा का प्रतीक है, जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए भी आगे बढ़ने का हौसला रखते हैं।

संघर्ष से सफलता तक की यात्रा

अंजली ठाकुर का जीवन संघर्षों से भरा रहा है। जिला मंडी के गोहर उपमंडल के जनयानी गांव की रहने वाली अंजली सात साल पहले एक दर्दनाक सड़क हादसे का शिकार हो गईं। इस दुर्घटना ने उनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी और उन्हें हमेशा के लिए व्हीलचेयर पर बैठने को मजबूर कर दिया।

कई लोग ऐसे हालात में हार मान लेते हैं, लेकिन अंजली ने ठान लिया कि उनकी पहचान उनकी कमजोरी से नहीं, बल्कि उनके हुनर और मेहनत से बनेगी। इसी जज़्बे ने उन्हें बोशिया खेल की ओर अग्रसर किया—एक ऐसा खेल जिसमें दिव्यांग खिलाड़ी अपनी रणनीति, एकाग्रता और कौशल से बाज़ी मारते हैं।

बोशिया : खेल जो बनता है जीवन की ताकत

बहुत से लोग इस खेल से अभी भी परिचित नहीं हैं। बोशिया पैरा स्पोर्ट्स की श्रेणी का एक विशेष खेल है, जिसे व्हीलचेयर पर बैठकर खेला जाता है। इसमें गेंदों को सटीकता से फेंकने और लक्ष्य साधने की कला प्रमुख होती है। यह खेल खिलाड़ियों के धैर्य, मानसिक मजबूती और सूझबूझ की परीक्षा लेता है। अंजली ने इस खेल को अपनाकर न केवल खुद को साबित किया, बल्कि भारत में इस खेल की लोकप्रियता भी बढ़ाई।

पहले भी दिला चुकी हैं भारत को स्वर्ण

अंजली ठाकुर इससे पहले भी अंतरराष्ट्रीय पैरा बोशिया गेम्स के एकल वर्ग में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। उनके इस प्रदर्शन ने उन्हें भारत की उभरती हुई पैरा बोशिया स्टार के रूप में पहचान दिलाई। इस बार का कांस्य पदक उनकी उपलब्धियों की श्रृंखला में एक और सुनहरा अध्याय जोड़ता है। प्रदेशवासियों और खेल जगत में उनकी इस उपलब्धि पर खुशी की लहर है। गांव से लेकर शहर तक, हर कोई अंजली पर गर्व महसूस कर रहा है। उनकी यह जीत यह साबित करती है कि यदि इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो न कोई बाधा बड़ी होती है और न ही कोई सपना अधूरा। समूचे देश की मातृशक्ति को उत्साह और ऊर्जा से भर दिया। ◆◆◆

हिमाचल की पहली गर्भ संस्कार विशेषज्ञ – शिखा मनकोटिया

हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के गगरेट उपमंडल के गांव चलेट की बेटी शिखा मनकोटिया ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है, बल्कि गर्भ संस्कार जैसे गूढ़ और वैज्ञानिक विषय को समाज में लोकप्रिय बनाने में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। लखनऊ विश्वविद्यालय की टॉपर रही शिखा मनकोटिया ने गर्भ संस्कार में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा हासिल किया। वर्तमान में वे शूलिनी विश्वविद्यालय से योग और गर्भ संस्कार विषय में पीएचडी कर रही हैं। शिखा का मानना है कि गर्भ संस्कार केवल धार्मिक या परंपरागत प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह वैदिक विज्ञान है। इसके माध्यम से आने वाली पीढ़ी को संस्कारित, स्वस्थ और सफल बनाया जा सकता है। उनका उदाहरण इस दृष्टांत से मिलता है कि जैसे बीज बोने से पहले मिट्टी तैयार की जाती है, उसी प्रकार मां के गर्भ में सही संस्कार देने से समाज की नींव मजबूत और समृद्ध बन सकती है। आज शिखा विभिन्न मंचों, कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जागरूक कर रही हैं। वे गर्भ संस्कार की महत्ता को सरल भाषा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समझा रही हैं। स्थानीय लोग शिखा की इस पहल को न केवल हिमाचल बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणादायी मानते हैं।

संघ एवं सेवा भारती का मानवीय प्रयास

आपदा में 2200 से अधिक परिवारों तक पहुंचाई मदद

हिमाचल प्रदेश में हाल ही में आई प्राकृतिक आपदा के बाद सेवा भारती हिमाचल प्रदेश ने व्यापक स्तर पर राहत कार्य चलाए हैं। प्रदेश के विभिन्न प्रभावित जिलों में 500 से अधिक स्वयंसेवक प्रत्यक्ष रूप से और 700 से 800 कार्यकर्ता बैकएंड में लगातार सक्रिय रहे।

सेवा भारती हिमाचल के संगठन मंत्री श्री राकेश जी ने बताया कि पिछले ढाई महीनों में सेवा भारती ने लगभग 2200 से 2500 प्रभावित परिवारों तक सीधी सहायता पहुँचाई। राहत सामग्री में तरपाल (1660), गद्दे (1107), कंबल (2245), राशन किट (1425), गैस चूल्हे (318), सोलर लाइट (1250), स्कूल बैग (900), कॉपियां (5480), मेडिकल किट (5000) सहित जीवन-उपयोगी वस्तुएं वितरित की गईं। इसके अतिरिक्त लगभग 26 लाख रुपये की आपदा राहत राशि 103 परिवारों तक पहुंचाई गई।

जिलावार प्रमुख कार्य

मंडी व सुंदरनगर : लगभग 150 गाँव प्रभावित, 2200 से अधिक परिवारों को सहायता। नोफल संस्था के सहयोग से 25 दिन तक प्रतिदिन 500-700 लोगों को लंगर सुविधा।

बंजार : 800 परिवार प्रभावित, 100+ कार्यकर्ताओं द्वारा छह खंडों में कार्यरत, कठिन क्षेत्रों में पीठ पर सामान ढोकर पहुँचाया।

करसोग, रामपुर, कुल्लू, हमीरपुर, बिलासपुर, नूरपुर, तीसा, सरकाघाट सहित कई जिलों में कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर राहत सामग्री पहुँचाई। सरकाघाट में विशेष रूप से दो निर्धन कन्याओं के विवाह का संपूर्ण खर्च भी सेवा भारती ने उठाया।

नूरपुर : बाढ़ प्रभावित 40-50 गाँवों में मानव व पशुओं दोनों के लिए भोजन व चारे की व्यवस्था।

तीसा : दुर्गम क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं ने कंधों पर सामान ढोकर प्रभावित परिवारों तक पहुँचाया।

प्रदेशभर में 20 आपदा राहत कैंप स्थापित किए गए, जिनमें मंडी, सुंदरनगर, रामपुर, बंजार, कुल्लू, पालमपुर, सरकाघाट, हमीरपुर, तीसा, बिलासपुर, नूरपुर, चंबा, सोलन और रोहड़ू प्रमुख हैं।

सेवा भारती का अनुमान है कि अब तक प्रदेश में 2000 से अधिक घर पूर्णतः क्षतिग्रस्त हुए हैं और आंशिक रूप से प्रभावित घरों की संख्या इसका तीन गुना हो सकती है। आपदा में लगभग 350 से अधिक लोगों की मृत्यु और 70 से अधिक लोगों के लापता होने की पुष्टि भी हुई है।

आगे की योजना

सेवा भारती ने कहा कि आने वाले समय में प्रभावित परिवारों को घर पुनर्निर्माण हेतु यथासंभव वित्तीय एवं सामग्री सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। संस्था ने समाजसेवियों और दानदाताओं से इस पुनीत कार्य में सहयोग का भी आह्वान किया है।

संकट की घड़ी में - ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास आपके साथ

(महाजन सभा) चम्बा में ठाकुर रामसिंह स्मृति न्यास, हमीरपुर द्वारा जिनके घर आपदा में पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हुए थे, ऐसे चम्बा, तिस्सा स्थानों से प्रभावित 42 परिवारों को 10.50 लाख की सहायता राशि दी गई। ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास की ओर से ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास के माननीय अध्यक्ष अशोक शर्मा जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री बनवीर सिंह जी, सह प्रांत प्रचारक श्री ओम प्रकाश, विभाग संघचालक डॉ. शिवदयाल, जिला संचालक राजेश कुमार उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्मृति न्यास के पदाधिकारी ने सभी प्रभावित परिवारों को आश्वासन दिया कि आने वाले समय में भी सब की सहायता की जाएगी और समाज के अन्य दानी सज्जनों तथा सामाजिक संस्थाओं से सहयोग के लिए आह्वान किया।

भारत को समझने के लिए 'लोक संस्कृति' को समझना जरूरी : जे. नंद कुमार

एनआईटी हमीरपुर में उन्नत भारत अभियान और प्रज्ञा प्रवाह के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में प्रज्ञा प्रवाह के अखिल भारतीय संयोजक जे. नंद कुमार जी ने कहा कि भारत के इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से पढ़ने, लिखने और समझने की आवश्यकता है, जिसके लिए लोक संस्कृति का अध्ययन आवश्यक है। भारत को पश्चिमी प्रभाव से निकलने और औपनिवेशिक मानसिकता की समाप्ति के लिए 'स्व' के जागरण की आवश्यकता है, जिसके लिए भारतीय चिंतन धारा को सही दिशा में लाने के लिए विद्वानों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसका और एक बेहतरीन प्रयास है, जिसमें भारत केन्द्रित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। शोध में प्रयोग होने वाली शोध प्रणाली के भारतीयकरण को बल देना आवश्यक है। एनआईटी हमीरपुर उन्नत भारत अभियान एवं प्रज्ञा प्रवाह के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पहली एक दिवसीय कार्यशाला में शिक्षाविद् और विचारक जे.नन्द कुमार ने कही। इस कार्यशाला की अध्यक्षता एनआईटी के निदेशक प्रो. एचएम सूर्यवंशी ने की, जबकि कुलसचिव अर्चना ननौटी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह और उन्नत भारत अभियान के समन्वयक डॉ. चन्द्र प्रकाश ने कार्यशाला के विषय विकसित भारत पर विचार प्रस्तुत किए और इसके प्रति सभी प्रतिभागियों को अपने-अपने दायित्व के महत्व के बारे में जानकारी दी। इस कार्यशाला में प्रज्ञा प्रवाह के संगठन को हिमाचल प्रांत में सुदृढ़ करने की दृष्टि से प्रसिद्ध स्तंभकार और लेखक हेमांशु मिश्रा को प्रांत संयोजक, एचपीयू के एसोसिएट प्रो. डॉ. राजेश शर्मा को सह संयोजक का दायित्व सौंपा गया। प्रांत कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में डॉ. युद्धवीर पटियाल, डॉ. जसपाल खत्री, डॉ. राकेश शर्मा, डॉ. मोहिनी अरोड़ा, डॉ. नीलम ठाकुर, डॉ. कुलदीप शर्मा, डॉ. अशोक तिवारी एवं आईआईटी मंडी के डॉ. सूर्यप्रकाश को तय किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों से जुड़े 40 से अधिक शिक्षाविदों और विद्वत जनों ने सहभागिता की।

डॉ. उमेश मौदगिल सर्वसम्मति से बने मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष

मातृवन्दना संस्थान की आम सभा की बैठक डॉ. हेडगेवार भवन नाभा में आयोजित की गई। इस बैठक में संस्थान के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों ने भाग लिया। संस्थान के सचिव द्वारा मातृवन्दना संस्थान की गत वर्ष किए गए क्रियाकलापों एवं आय-व्यय का विस्तृत विवरण आम सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिसे सभी सदस्यों ने अनुमोदित किया गया।

संस्थान निवर्तमान अध्यक्ष श्री अजय सूद का दो वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर उन्होंने पुरानी कार्यकारिणी को भंग करने की घोषणा की तथा आगामी दो वर्षों (2025-2027) के लिए नई कार्यकारिणी के गठन हेतु सभा के समक्ष प्रस्ताव रखा।

मातृवन्दना संस्थान के सचिव श्री धीरज वर्मा ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आम सभा ने संस्थान के वरिष्ठ सदस्य डॉ. दयानंद शर्मा को निवार्चन अधिकारी नियुक्त किया गया। उन्होंने चुनावी प्रक्रिया आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम संस्थान के अध्यक्ष पद के लिए नाम आमंत्रित किए। अध्यक्ष पद के लिए सभा के सदस्यों ने डॉ. उमेश मौदगिल के नाम पर सहमति जताई। इसके अलावा संस्थान के संरक्षक के रूप में डॉ. दयानन्द शर्मा, उपाध्यक्ष हेतु डॉ. राजेश शर्मा, सचिव श्री धीरज वर्मा, सह सचिव डॉ. सपना चंदेल, कोषाध्यक्ष श्री लेखराज वर्मा के नामों पर सहमति जताई गई। डॉ. कर्म सिंह, श्री अजय सूद जी, डॉ. निशा ठाकुर, श्री कुलदीप शर्मा, श्री नरेन्द्र कुमार संस्थान के सदस्य मनोनीत किए गए। इसके अलावा विशेष आमंत्रित सदस्यों में डॉ. किस्मत कुमार, डॉ. चन्द्र प्रकाश, श्री प्रताप समयाल एवं श्री मोतीलाल जी शामिल किए गए हैं।

राष्ट्रीय और सामाजिक दायित्वों से विमुख होता दिख रहा हिन्दी सिनेमा: डॉ. द्विवेदी

'राष्ट्र जागरण में सिनेमा की भूमिका' विषय पर आभासी कार्यशाला आयोजित

हिम सिने सोसायटी शिमला के तत्वावधान में 'राष्ट्र जागरण में सिनेमा की भूमिका' विषय पर एक महत्वपूर्ण आभासी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश सहित विभिन्न प्रांतों से जुड़े लगभग 75 कलाकारों, अभिनेताओं, साहित्यकारों, रंगकर्मियों और बुद्धिजीवियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता प्रख्यात निर्देशक, लेखक और अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी (प्रसिद्ध चाणक्य धारावाहिक के निर्माता-निर्देशक) रहे। 'सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन भर नहीं है, बल्कि दृश्य-श्रव्य माध्यम के जरिए सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भों को जन-जन तक पहुँचाने का एक सशक्त औजार है। आज यह चुनौती भरा कार्य अवश्य है, परंतु नए संचार माध्यमों के विस्तार ने इसे और भी सुलभ बना दिया है। हमें चाहिए कि नवोदित फिल्मकार राष्ट्र और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और सिनेमा को जागरण का माध्यम बनाएं।'

डॉ. द्विवेदी ने आगे कहा कि राष्ट्र जागरण के प्रति सिनेमा पहले भी सक्रिय रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर स्वतंत्र भारत के निर्माण तक फिल्मों ने राष्ट्रीय एकता और जागरूकता को बल दिया। किंतु आज उद्योगवाद और व्यावसायिकता के दबाव में हिंदी सिनेमा कहीं न कहीं अपने राष्ट्रीय और सामाजिक दायित्वों से विमुख होता दिखाई देता है।

प्रांत प्रचार प्रमुख प्रताप सिंह समयाल ने अपने विचार रखते हुए कहा कि 'आने वाले समय में वैचारिक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को सिनेमा के जरिए जनता तक पहुँचाना आवश्यक है। प्रदेश में सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम न होकर, देश, धर्म, राष्ट्र और संस्कृति के प्रति जिम्मेदारियों और विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का सेतु बने।'

कार्यशाला का संचालन करते हुए हिम सिने सोसायटी के उपाध्यक्ष संजय सूद ने बताया कि यह आयोजन वास्तव में एक संवाद का मंच बना, जिसमें जिला कुल्लू, मंडी, शिमला, सिरमौर, चंबा, बिलासपुर, हमीरपुर, अंबाला और कांगड़ा के

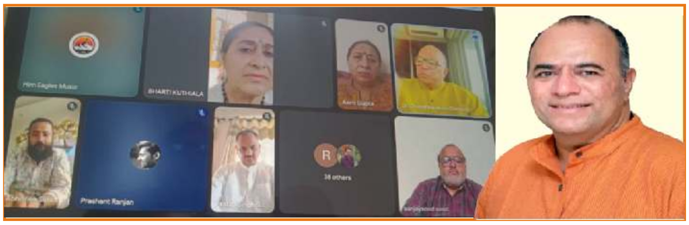

प्रतिभागियों ने अपने विचार साझा किए और डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी से सीधा संवाद भी किया। अंत में सोसायटी के फिल्म आयाम प्रमुख भारतीय कुठियाला ने सभी प्रतिभागियों और विशेषकर मुख्य वक्ता डॉ. द्विवेदी का आभार व्यक्त किया।◆◆◆

"द बंगाल फाइल्स" देखकर भावुक हुए दर्शक

हिम सिने सोसायटी ने किया अभिनेता एकलव्य को सम्मानित

हिम सिने सोसायटी शिमला की ओर से आईएसबीटी शिमला स्थित आयान सिनेमा में बहुचर्चित फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' का विशेष प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला के युवा अभिनेता ''एकलव्य सूद'' ने भी दर्शकों के बीच बैठकर इस फिल्म का भरपूर आनंद लिया। इस मौके पर फिल्म में उनके उत्कृष्ट अभिनय के लिए, सोसायटी द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। फिल्म खत्म होने के बाद एकलव्य सूद के साथ दर्शक उनके साथ सेल्फी लेने एवं फोटो खिंचवाने के लिए काफी उत्साहित दिखे।

'द बंगाल फाइल्स' भारत के इतिहास के उन दर्दनाक और कठिन पलों को उजागर करती है, जब सामान्य लोग असाधारण साहस और धैर्य का परिचय देकर जिंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे। फिल्म देखने के दौरान दर्शक भावुक हो उठे और कलाकारों के अभिनय की जमकर सराहना की।◆◆◆

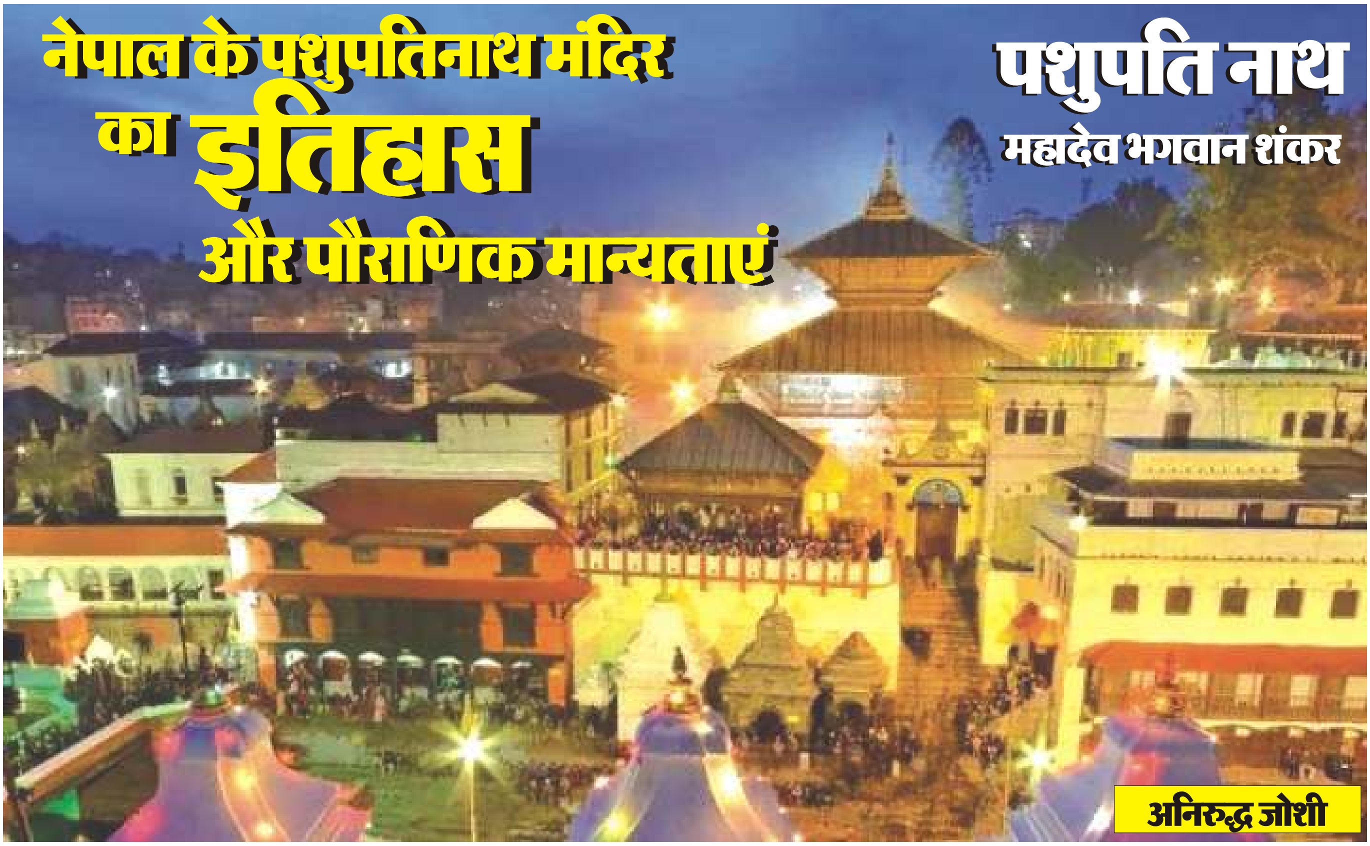

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर का इतिहास और पौराणिक मान्यताएं

अनिरुद्ध जोशी

विश्व में दो पशुपतिनाथ मंदिर प्रसिद्ध है एक नेपाल के काठमांडू का और दूसरा भारत के मंदसौर का। दोनों ही मंदिरों में मूर्तियां समान आकृति वाली है। नेपाल का मंदिर बागमती नदी के किनारे काठमांडू में स्थित है और इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल किया गया है। यह मंदिर भव्य है और यहां पर देश-विदेश से पर्यटक आते हैं।

पशुपति का अर्थ – पशु अर्थात जीव या प्राणी और पति का अर्थ है स्वामी और नाथ का अर्थ है मालिक या भगवान। इसका मतलब यह कि संसार के समस्त जीवों के स्वामी या भगवान हैं पशुपतिनाथ। दूसरे अर्थों में पशुपतिनाथ का अर्थ है जीवन का मालिक।

मंदिर का परिचय : नेपाल में पशुपतिनाथ का मंदिर काठमांडू के पास देवपाटन गांव में बागमती नदी के किनारे स्थित है। मंदिर में भगवान शिव की एक पांच मुंह वाली मूर्ति है। पशुपतिनाथ विग्रह में चारों दिशाओं में एक मुख और एकमुख ऊपर की ओर है। प्रत्येक मुख के दाएं हाथ में रुद्राक्ष की माला और बाएं हाथ में कमंडल मौजूद है। मान्यता अनुसार पशुपतिनाथ मंदिर का ज्योतिर्लिंग पारस पत्थर के समान है।

कहते हैं कि ये पांचों मुंह अलग-अलग दिशा और गुणों का परिचय देते हैं। पूर्व दिशा की ओर वाले मुख को तत्पुरुष और पश्चिम की ओर वाले मुख को सद्ज्योत कहते हैं। उत्तर दिशा की ओर वाले मुख को वामवेद या अर्धनारीश्वर कहते हैं और दक्षिण दिशा वाले मुख को अघोरा कहते हैं। जो मुख ऊपर की ओर है उसे ईशान मुख कहा जाता है।

इस मंदिर में भगवान शिव की मूर्ति तक पहुंचने के चार दरवाजे बने हुए हैं। वे चारों दरवाजे चांदी के हैं। पश्चिमी द्वार की ठीक सामने शिव जी के बैल नंदी की विशाल प्रतिमा है जिसका निर्माण पीतल से किया गया है। इस परिसर में वैष्णव और शैव परंपरा के कई मंदिर और प्रतिमाएं है। पशुपतिनाथ मंदिर को शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, केदारनाथ मंदिर का आधा भाग माना जाता है। यह मंदिर हिंदू और बौद्ध वास्तुकला का एक अच्छा मिश्रण है। मुख्य पगोडा शैली का मंदिर सुरक्षित आंगन में स्थित है जिसका संरक्षण नेपाल पुलिस द्वारा किया जाता है। यह मंदिर लगभग 264 हेक्टर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें 518 मंदिर

और स्मारक सम्मिलित है। मंदिर की द्वी स्तरीय छत का निर्माण तांबे से किया गया है जिनपर सोने की परत चढाई गई है। मंदिर वर्गाकार के एक चबूतरे पर बना है जिसकी आधार से शिखर तक की ऊंचाई 23 मीटर 7 सेंटीमीटर है। मंदिर का शिखर सोने का है जिसे गजुर कहते हैं। परिसर के भीतर दो गर्भगृह है एक भीतर और दुसरा बाहर। भीतरी गर्भगृह वह स्थान है जहां शिव की प्रतिमा को स्थापित किया गया है जबकि बाहरी गर्भगृह एक खुला गलियारा है। भीतरी आंगन में मौजूद मंदिर और प्रतिमाओं में वासुकि नाथ मंदिर, उन्मत्ता भैरव मंदिर, सूर्य नारायण मंदिर, कीर्ति मुख भैरव मंदिर, बूदानिल कंठ मंदिर हनुमान मूर्ति, और 184 शिवलिंग मूर्तियां प्रमुख रूम से मौजूद है जबकि बाहरी परिसर में राम मंदिर, विराट स्वरूप मंदिर, 12 ज्योतिर्लिंग और पंद्र शिवालय गुह्येश्वरी मंदिर के दर्शन किए जाते हैं। पशुपतिनाथ मंदिर के बाहर आर्य घाट स्थित है। पौराणिक काल से ही केवल इसी घाट के पानी को मंदिर के भीतर ले जाने का प्रावधान है।

मंदिर का प्राचीन इतिहास – माना जाता है कि यह लिंग, वेद लिखे जाने से पहले ही स्थापित हो गया था। पशुपति काठमांडू घाटी के प्राचीन शासकों के अधिष्ठाता देवता रहे हैं। पाशुपत संप्रदाय के इस मंदिर के निर्माण का कोई प्रमाणित इतिहास तो नहीं है किन्तु कुछ जगह पर यह उल्लेख मिलता है कि मंदिर का निर्माण सोमदेव राजवंश के पशुप्रेक्ष ने तीसरी सदी ईसा पूर्व में कराया था। 605 ईस्वी में अमशुवर्मन ने भगवान के चरण छूकर अपने को अनुग्रहीत माना था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निर्माण लगभग 11वीं सदी में किया गया था। दीमक की वजह से मंदिर को बहुत नुकसान हुआ, जिस कारण लगभग 17वीं सदी में इसका पुनर्निर्माण किया गया। बाद में मध्य युग तक मंदिर की कई नकलों का निर्माण कर लिया गया। ऐसे मंदिरों में भक्तपुर (1480), ललितपुर (1566) और बनारस (19वीं शताब्दी के प्रारंभ में) शामिल हैं। मूल मंदिर कई बार नष्ट हुआ है। इसे वर्तमान स्वरूप नरेश भूपलेंद्र मल्ला ने 1697 में प्रदान किया। अप्रैल 2015 में आए विनाशकारी भूकंप में पशुपतिनाथ मंदिर के विश्व विरासत स्थल की कुछ बाहरी इमारतें पूरी तरह नष्ट हो गयी थी जबकि पशुपतिनाथ का मुख्य मंदिर और मंदिर की गर्भगृह को किसी भी प्रकार की हानि नहीं हुई थी।

मंदिर के पुजारी तथा पूजा विधान : पशुपतिनाथ मंदिर में भगवान की सेवा करने के लिए 1747 से ही नेपाल के राजाओं ने भारतीय ब्राह्मणों को आमंत्रित किया था। बाद में 'माल्ला राजवंश' के एक राजा ने दक्षिण भारतीय ब्राह्मण को मंदिर का प्रधान पुरोहित नियुक्त कर दिया। दक्षिण भारतीय भट्ट ब्राह्मण ही इस मंदिर के प्रधान पुजारी नियुक्त होते रहे थे। वर्तमान में प्रचंड सरकार के काल में भारतीय ब्राह्मणों का एकाधिकार खत्म कर नेपाली लोगों को पूजा का उत्तरदायित्व सौंप दिया गया।

मंदिर खुलने का समय : यह मंदिर प्रत्येक दिन प्रातः 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुला रहता है। केवल दोपहर के समय और साय पांच बजे मंदिर के पट बंद कर दिए जाते है। मंदिर में जाने का सबसे उत्तम समय सुबह सुबह जल्दी और देर शाम का होता है। पूरे मंदिर परिसर का भ्रमण करने के लिए 90 से 120 मिनट का समय लगता है।

मंदिर से जुड़ी पौराणिक कथाएं : एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव यहां पर चिंकारे का रूप धारण कर निद्रा में चले बैठे थे। जब देवताओं ने उन्हें खोजा और उन्हें वाराणसी वापस लाने का प्रयास किया तो उन्होंने नदी के दूसरे किनारे पर छलांग लगा दी। कहा जाता हैं इस दौरान उनका सींग चार टुकडों में टूट गया था। इसके बाद भगवान पशुपति चतुर्मुख लिंग के रूप में यहां प्रकट हुए थे। **दूसरी कथा** एक चरवाहे से जुड़ी है। कहते हैं कि इस शिवलिंग को एक चरवाहे द्वारा खोजा गया था जिसकी गाय का अपने दूध से अभिषेक कर शिवलिंग के स्थान का पता लगाया था।

तीसरी कथा भारत के उत्तराखंड राज्य से जुडी एक पौराणिक कथा से है। इस कथा के अनुसार इस मंदिर का संबंध केदारनाथ मंदिर से है। कहा जाता है जब पांडवों को स्वर्गप्रयाण के समय शिवजी ने भैंसे के स्वरूप में दर्शन दिए थे जो बाद में धरती में समा गए लेकिन पूर्णतः समाने से पूर्व भीम ने उनकी पुंछ पकड़ ली थी। जिस स्थान पर भीम ने इस कार्य को किया था उसे वर्तमान में केदारनाथ धाम के नाम से जाना जाता है एवं जिस स्थान पर उनका मुख धरती से बाहर आया उसे पशुपतिनाथ कहा जाता है। पुराणों में पंचकेदार की कथा नाम से इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है। नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ मंदिर भगवान शिव का प्राचीन स्थल है जिसके प्रति हिंदुओं में आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास है। यह नेपाल की हिंदू संस्कृति की अनमोल विरासत है।◆◆◆

नई शुरुआत की कोई उम्र नहीं होती - क्षमा शर्मा

पिछले दिनों बाजार में बहुत पुरानी मित्र से मुलाकात हुई। हम दोनों ने साथ-साथ नौकरियां शुरू की थीं। लेकिन विवाह के बाद उसने नौकरी छोड़ दी। कारण था, उसके पति की बाहर की नौकरी। अक्सर ही स्त्रियों के साथ ऐसा होता है। कुछ दिनों तक तो उससे सम्पर्क रहा, फिर वह भी खत्म हो गया। मोबाइल तो थे नहीं उन दिनों। खैर, इतने दिनों बाद मिलने पर अतीत की तमाम बातें याद आ गईं। फिर बच्चों के बारे में बात होने लगी। पता चला कि उसके दोनों बच्चे विदेश में रहते हैं। पति की मृत्यु हो चुकी है। तो अब यहां अकेली रहती है। कहने लगी कि बच्चों के पास कभी-कभी जाती है, लेकिन रहना अपने देश में ही चाहती है। वहां मन नहीं लगता। फिर उसने बताया कि उसने अपना खाने-पीने का व्यवसाय शुरू किया है। क्योंकि बच्चे जब चले गए, फिर कुछ दिन बाद पति भी, तो समझ में नहीं आता था कि क्या करूं। खाना बनाना हमेशा पसंद रहा, लेकिन अकेली के लिए क्या बनाऊं, तो कई-कई दिन तक रसोई में जाती ही नहीं थी। लगता था कि बस जीवन यहीं तक था, अब खत्म हुआ। एक दिन सोसाइटी की एक युवा लडक़ी ने कहा कि काश, उसे घर जैसा खाना खाने को मिलता। यहीं से जैसे कोई क्लू मिला। बस उसने सोसाइटी के लोगों के बहुत से लोगों के नम्बर लेकर एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया। फिर उसी में रोज बताने लगी कि कल क्या बना रही है। कोई चाहे तो आर्डर कर सकता है। खाने के दाम भी ऐसे रखे कि किसी को ज्यादा चुभे नहीं। शुरू में तो एक-दो ही आर्डर आए, अब इतना काम है कि सहायता के लिए दो और लोगों को रखना पड़ा है। उसकी बातें सुनकर अमरीका की पूर्व प्रथम महिला मिशेल ओबामा का कुछ दिन पहले का कथन याद आ गया। उन्होंने कहा कि जब से उनकी दोनों बेटियां घर के घोंसले को खाली करके गई हैं, तब से उनकी जिंदगी ठहर सी गई है। वह बहुत अकेलापन महसूस करती हैं। यह कहानी सिर्फ मिशेल ओबामा की ही नहीं, अधिकांश माता-पिता की है। वे माताएं, जो पढ़ी-लिखी हैं, लेकिन बच्चों की जिम्मेदारी उठाने के कारण कभी अपने करियर या अभिरुचियों के बारे में नहीं सोच पाईं। उन सबकी कहानी एक जैसी है। कई माताएं और बहुत से पिता भी इस अकेलेपन को झेल नहीं पाते। जीवन के प्रति आकर्षण जैसे खत्म सा हो जाता है। अब इस उम्र में क्या करें कि बच्चों की कमी महसूस न हो। क्योंकि बच्चे जिस उड़ान पर निकले हैं, उनका भविष्य भी वहीं है। उन्हें तो रोका नहीं जा सकता, न ही पुराने दिनों को वापस लाया जा सकता है। इसलिए जरूरी है कि किसी और काम में मन लगाया जाए। एक महिला के बारे में कुछ दिन पहले पढ़ा था कि उसने यू-ट्यूब पर देखकर पेंटिंग करना सीखा। आज उसकी एक प्रदर्शनी दिल्ली में और एक अमरीका में लग चुकी है। एक अन्य महिला ने ऐसी ही अनेक महिलाओं का ग्रुप बनाया है। वह लाइफ कोच बन गई है। स्त्रियों को बच्चों के चले जाने के बाद के अकेलेपन से निपटने के लिए तरह-तरह के तरीके बताती है। इससे खूब आय भी होती है। एक और महिला ने भी अपनी ही जैसी स्त्रियों का एक ग्रुप बनाया है। ये सब तमाम मेलों में अपने-अपने बनाए खाने को लेकर जाती हैं और कमाई भी करती हैं। ये माह में एक बार कहीं घूमने भी जाती हैं। इस तरह समय भी कटता है और अकेलापन भी महसूस नहीं होता। एक पिता ने एक बार बताया था कि बेटे के बाहर पढऩे जाने के बाद, उसका घर आने का मन नहीं करता था। न किसी से मिलने-बात करने का। बस बेटे की पुरानी चीजों को देखकर, उसकी यादों में खोए रहकर, हर वक्त आंसू ही बहते रहते थे। दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे को दिलासा देते-देते भी रोने लगते थे। फिर उन्होंने संगीत सीखना शुरू किया। अब दोनों नौकरी से लौटने के बाद कई-कई घंटे रियाज करते हैं। बेटे की यादें अब उतनी परेशान नहीं करतीं।◆◆◆

देव आह्वान पर निकलने वाली ध्वनि तरंगों का रहस्य जानेंगे शोधकर्ता आईआईटी मंडी

ब्रह्मनाद होगा खोज का आधार

आईआईटी मंडी द्वारा पारंपरिक वाद्य टमक पर किया जा रहा यह शोध हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की एक महत्वपूर्ण पहल है। देव आह्वान और धार्मिक आयोजनों से जुड़ी इस ध्वनि ने सदियों से समाज को आध्यात्मिक और मानसिक ऊर्जा प्रदान की है। टमक वादन के माध्यम से प्रसारित होने वाली तरंगें न केवल उल्लास और जोश का संचार करती हैं, बल्कि इन्हें ब्रह्मनाद के रूप में भी देखा जाता है, जो मनुष्य के भीतर सकारात्मक भावनाओं को जाग्रत करता है।

इस खोज के लिए चुने गए प्रख्यात वादक अजय ठाकुर और उनकी टीम पारंपरिक अनुभव को वैज्ञानिक अध्ययन से जोड़ने का कार्य करेंगे। वहीं, डॉ. नंदलाल ठाकुर, अजय चतुर्वेदी और श्यामा गौतम जैसे शोधकर्ताओं की भागीदारी इसे और सशक्त बनाएगी। यह अध्ययन न केवल हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर को नई पहचान देगा बल्कि संगीत, विज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण योगदान साबित होगा।◆◆◆

मणिपुर मे पहली बार पहुंची रेल

मिजोरम में विकास की परियोजनाओं का उद्घाटन

पिछले साल मणिपुर में विभिन्न समुदायों के आपसी संघर्ष के कारण मणिपुर काफी चर्चा में रहा है और इस विरोधाभास के कारण संसद भी ठप्प रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मणिपुर पहुंचने पर पीएम मोदी का जोरदार स्वागत हुआ। उन्होंने हिंसा पीड़ितों से मुलाकात करके मणिपुर के लोगों के जज्बे को सलाम किया। मणिपुर में पीएम मोदी के स्वागत में जनसैलाब उमड पाड़ा। लोगों ने सडक़ की दोनों ओर खड़े होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भव्य स्वागत किया। इस दौरान मणिपुर के छोटे बच्चे भी प्रधानमंत्री से मिले और उनके साथ बातचीत की। इसअवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि मणिपुर एक सीमावर्ती राज्य है और यहां कनेक्टिविटी हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है। अच्छी सडक़ों की कमी के कारण आपको जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, मैं उन्हें अच्छी तरह समझता हूँ। इसीलिए, 2014 से, मैंने मणिपुर की कनेक्टिविटी को लगातार बेहतर बनाने पर ज़ोर दिया है और इसके लिए भारत सरकार ने दो स्तरों पर काम किया है। पहला, हमने मणिपुर में सडक़ और रेलवे पर बजट बढ़ाया। दूसरा, हमने गांवों को सडक़ों से जोडऩे के लिए प्रयास किए... पिछले कुछ वर्षों में, मणिपुर में राष्ट्रीय राजमार्गों पर 3,700 करोड़ रुपये खर्च किए गए। नए राजमार्गों के निर्माण पर 8,700 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

मणिपुर में हिंसा पीड़ितों से मिले पीएम मोदी

मणिपुर पहुंचकर पीएम मोदी ने सबसे पहले हिंसा पीड़ितों से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने चूड़चंदपुर में 7,300 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं के शिलान्यास किए। इन परियोजनाओं में 3,600 करोड़ रुपये से अधिक की मणिपुर शहरी सडक़ें, जल निकासी और परिसंपत्ति प्रबंधन सुधार परियोजना; 2,500 करोड़ रुपये से अधिक की 5 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाएँ;मणिपुर इन्फोटेक डेवलपमेंट (MIND) परियोजना, 9 स्थानों पर कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास आदि शामिल हैं। कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे एक कलाकार ने कहा कि हम अपना पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत करके प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत करने आए हैं। हम बहुत खुश हैं। हमें उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी भविष्य में भी राज्य में और विकास लाएंगे।

पूर्वोत्तर के विकास कार्य : प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में, पूर्वोत्तर के कई राज्य भारत के रेल मानचित्र पर आ गए हैं। पहली बार, ग्रामीण सडक़ें और राजमार्ग, मोबाइल कनेक्टिविटी और इंटरनेट कनेक्शन, बिजली, नल का पानी और एलपीजी कनेक्शन, भारत सरकार ने सभी प्रकार की कनेक्टिविटी को मजबूत करने के लिए कड़ी मेहनत की है। मिजोरम को हवाई यात्रा के लिए उड़ान योजना का भी लाभ मिलेगा। जल्द ही यहां हेलीकॉप्टर सेवा शुरू होगी। हमारी एक्ट ईस्ट नीति और उभरते पूर्वोत्तर आर्थिक गलियारे, दोनों में मिजोरम की प्रमुख भूमिका है। कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना और सैरांग-ह्मांगबुचुआ रेलवे लाइन के साथ, मिजोरम दक्षिण पूर्व एशिया के माध्यम से बंगाल की खाड़ी से भी जुड़ जाएगा। इससे पूर्वोत्तर भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

देश के विकास में मिजोरम की भूमिका महत्वपूर्ण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि चाहे स्वतंत्रता आंदोलन हो या राष्ट्र निर्माण, मिज़ोरम के लोग हमेशा योगदान देने के लिए आगे आए हैं। त्याग और सेवा, साहस और करुणा, ये मूल्य मिजोरम समाज के केंद्र में हैं। दिल्ली से पहली बार सीधे जुड़ा मिजोरम

प्रधानमंत्री ने 8,070 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली बैराबी-सैरांग नई रेल लाइन का उद्घाटन किया, जो मिज़ोरम की राजधानी को पहली बार भारतीय रेल नेटवर्क से जोड़ेगी। चुनौतीपूर्ण पहाड़ी क्षेत्र में निर्मित इस रेल लाइन परियोजना में जटिल भौगोलिक परिस्थितियों में 45 सुरंगें बनाई गई हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें 55 बड़े पुल और 88 छोटे पुल भी शामिल हैं। मिजोरम में रेल लाइन का उद्घाटन पीएम मोदी शनिवार को मिजोरम पहुंचे। खराब मौसम के कारण वह सभास्थल तक नहीं पहुंच सके। उन्होंने ऑनलाइन ही मिजोरम में रेल लाइन का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर खराब मौसम के कारण नहीं उतर पाया। उसके बाद उन्होंने चुनौती को स्वीकार करते हुए सडक़ मार्ग से यात्रा की। इस यात्रा के दौरान मिजोरम के लोगों ने सडक़ पर खड़े होकर उनका भव्य स्वागत किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार अमृत

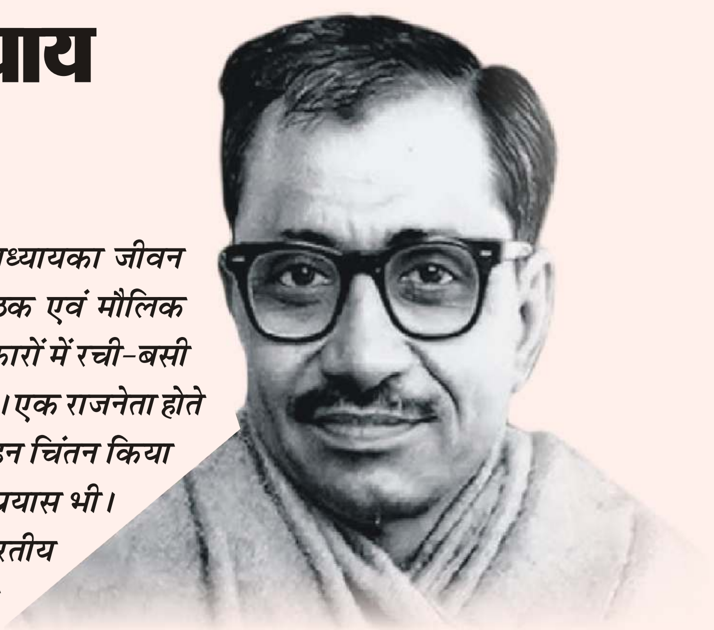

सरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति पंडित दीनदयाल उपाध्यायका जीवन परिश्रम और पुरुषार्थ का पर्याय था। वे कुशल संगठक एवं मौलिक चिंतक थे। सामाजिक सरोकार एवं संवेदना उनके संस्कारों में रची-बसी थी। उनकी वृत्ति एवं प्रेरणा सत्ताभिमुखी नहीं, समाजोन्मुखी थी। एक राजनेता होते हुए भी उन्होंने जीवन और जगत के सभी पक्षों एवं प्रश्नों पर गहन चिंतन किया और उसका युगानुकूल चित्र खींचने और उत्तर देने का सार्थक प्रयास भी। इस नाते वे एक राजनेता से अधिक राष्ट्र-ऋषि थे। आज भारतीय जनता पार्टी जिस भिन्न एवं विशिष्ट वैचारिक अधिष्ठान और मजबूत सांगठनिक आधार पर खड़े और टिके रहने का दावा करती है, उसके वास्तविक शिल्पी और प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ही थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक बड़े विचारक, समाजसेवी और नेता थे। उन्होंने हमेशा समाज, देश और आम लोगों के हित में काम किया। उनके विचार बहुत साफ, सच्चे और प्रेरणादायक होते हैं। उन्होंने 'एकात्म मानववाद' की बात की, जिसमें व्यक्ति, समाज और देश को एक साथ जोड़ने की सोच है। उनके कहे हुए शब्द आज भी लोगों को सही रास्ता दिखाते हैं। यथा-

- हमारी आर्थिक नीति ऐसी होनी चाहिए जो हमारी संस्कृति के अनुरूप हो।
- हम पश्चिमी विचारों की नकल करके भारतीय समाज की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते।
- राष्ट्र कोई मिट्टी का ढेर नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति है। भारत को भारत की दृष्टि से देखना होगा, तभी हम अपने रास्ते पर चल पाएंगे।
- सत्ता सेवा का माध्यम होनी चाहिए, नियंत्रण का नहीं।
- राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि समाजसेवा का माध्यम है।
- भारतीयता का अर्थ है - अपनी जड़ों से जुड़कर आधुनिकता को अपनाना।
- हमारा राष्ट्र एक भूखंड नहीं, अपितु एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है।
- सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना राष्ट्र आत्मा की रक्षा करना है।
- मनुष्य न केवल शरीर है, बल्कि वह चित्त, बुद्धि और आत्मा से भी बना है।
- एकात्म मानववाद का लक्ष्य है - व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन।
- राज्य का कर्तव्य है कि वह समाज को दिशा दे, लेकिन समाज के स्वाभाविक विकास में बाधा न बने।
- समाज की अंतिम इकाई - अंतिम व्यक्ति - तक विकास पहुंचे, यही हमारी योजना होनी चाहिए।
- भारतीय विचारधारा में धर्म का मतलब संप्रदाय नहीं, बल्कि कर्तव्य है।
- नैतिकता के सिद्धांत किसी के द्वारा बनाये नहीं जाते, बल्कि खोजे जाते हैं।
- धर्म वह शक्ति है जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को एकता में बांधती है।
- समाज का विकास अंतिम व्यक्ति के उत्थान से ही मापा जाना चाहिए।

विदेशों में रामायण कथा की परंपरा और रामलीला का मंचन

डॉ. कर्म सिंह
लेखक एवं साहित्यकार

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है और महर्षि वाल्मीकि द्वारा विराजित रामायण संस्कृत का सर्वप्रथम महाकाव्य है इससे यह भी स्पष्ट होता है कि संस्कृत महाकाव्य रामायण का परवर्ती महाकाव्य पर प्रभाव रहा है इसीलिए विदेश में प्रसिद्ध काव्य में रामायण का प्रभाव और रामायण के प्रसंग तथा रामायण की कथा प्रचलन में दिखाई देती है। भले ही वहां पात्रों के नाम बदल गए हों, अभिव्यक्ति में भी भिन्नताएं हों, परंतु भक्ति भाव एवं कथानक और प्रसंग रामायण पर आधारित हैं।

वास्तव में रामायण, एक प्राचीन भारतीय पौराणिक कथा है जिसे हिंदुओं द्वारा बेहद प्यार और सम्मान दिया जाता है। कथा तो आप सभी जानते हैं, जिसमें राजा राम माता सीता को लंका से छुड़ाने के लिए दुष्ट रावण पर विजयी प्राप्त करते हैं। रामायण की यह पावन कथा भारत के अतिरिक्त दुनिया के अन्य देशों में भी प्रचलित है। रामायण, एक प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक कथा है जिसे हिंदुओं द्वारा बेहद प्यार और सम्मान दिया जाता है।

भारत के अलावा अन्य देशों में भी रामायण की कथा का प्रचारण है रामायण के अनेक प्रसंग उन देशों में विभिन्न अवसरों पर मंचन किया जाता हैतथा कथा का गायन एवं प्रदर्शन भी होता है। भले ही वहां की सांस्कृतिक परंपरा में भाषा तथा सामाजिक रीति-रिवाज और राष्ट्र के धर्म एवं मान्यताओं के आधार पर विभिन्नताएं हो सकती हैं परंतु कथा के प्रसंग रामायण पर आधारित हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। जैसे –

थाईलैंड में रामायण : थाईलैंड में रामायण को रामकियन कहा जाता है जो थाईलैंड की राष्ट्रीय पुस्तक भी है। प्रारंभिक थाईलैंड की राजधानी को अयुत्या कहा जाता था, जिसका नाम श्री राम की अयोध्या की राजधानी के नाम पर रखा गया था। थाईलैंड में रामायण के अनुसार थाईलैंड के राजा खुद को श्री राम के वंशज मानते थे। थाईलैंड के अंतिम शासक वंश को राम कहा जाता है और श्याम देश थाईलैंड का पुराना नाम था, जिसे 1939 में नए नाम थाईलैंड के साथ बदल दिया गया जिसका अर्थ है स्वतंत्र देश। थाईलैंड में रामायण की कथा बहुत प्रचलित है। ईसा के बाद की शुरुआती शताब्दियों में, कई राजाओं का नाम 'राम' था। रामायण के विभिन्न नाटकीय संस्करण और रामायण पर आधारित नृत्य का आयोजन थाईलैंड और विभिन्न दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया आदि में किया जाता है।

वर्मा में रामायण : बर्मा में रामायण को 'यमयान' कहा जाता है जो अनौपचारिक रूप से बर्मा का राष्ट्रीय महाकाव्य है। इसे यम (राम) जत्दाव (जातका) भी कहा जाता है। बर्मा में, राम को 'यम' और सीता को 'मी थीडा' कहा जाता है। हां भी राम कथा का प्रचलन है।

कंबोडिया में रामायण रिमकर जिसे रामकरती भी कहा जाता है – राम (राम) + कीर्ति (महिमा) संस्कृत के रामायण महाकाव्य पर आधारित कंबोडियाई महाकाव्य है। जिस का अर्थ है 'राम की

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

थाईलैंड

इंडोनेशिया

कंबोडिया

महिमा'। यह हिंदू विचारों को बौद्ध विषयों में लेकर आता है और दुनिया में अच्छाई और बुराई के संतुलन को दर्शाता है।

मलेशिया में रामायण हिकायत सेरी राम हिंदू महाकाव्य 'रामायण' का मलय रूपांतरण है। हिकायत सेरी राम की मुख्य कहानी मूल वाल्मीकि रामायण के समान ही है, लेकिन इसके कुछ पहलुओं को जैसे कि शब्दों और नाम के उच्चारण को स्थानीय भाषा में संशोधित किया गया था।

इंडोनेशिया में रामायण जावा, इंडोनेशिया में रामायण को 'काकाविन रामायण' कहा जाता है, जो काव्या का जावानीज़ रूप है, जिसमें पारंपरिक संस्कृत के आदर्श को दिखाया गया है।

चीन में रामायण राम की विभिन्न जातक कथाएं चीन में भी काफी लोकप्रिय थीं। रामायण का सबसे पहला ज्ञात कथन एक बौद्ध ग्रंथ, लिउडु जी जिंग में पाया गया था। चीनी समाज पर रामायण का प्रभाव एक बंदर राजा सन वुकोंग की लोकप्रिय लोककथाओं से स्पष्ट होता है, जो रामायण के हनुमान के समान है।

यूरोप में रामायण इटली में पुरातात्विक खुदाई में प्राचीन इटालियन घरों की दीवारों पर विभिन्न चित्रों की खोज की गई, जो रामायण के दृश्यों पर आधारित हैं। कुछ चित्रों में दो पुरुषों के साथ पूंछ वाले व्यक्तियों को दिखाया गया है जिनके कंधों पर धनुष और बाण हैं, जबकि एक महिला उनके बगल में खड़ी है। ये पेंटिंग 7 ईसा पूर्व की हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रामायण की कथा का विभिन्न रूपों में प्रचलन है जो वहां की लोक संस्कृति में पूरी तरह से रचा बसा हुआ है यह रामायण की लोकप्रियता और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की सर्वव्यापकता का उदाहरण है जिसे आज भी विश्व समुदाय एकमत से स्वीकार कर रहा है। विदेशी समुदाय की सहभागिता राम के प्रति उनकी श्रद्धा और आस्था को दर्शाती है। इस प्रकार विश्व के विभिन्न देशों में भी श्रीराम का चरित्र आदर्श माना जाता है। अनेक देशों में भगवान श्री राम की विभिन्न समुदायों द्वारा पूजा- अर्चना की जाती है, जिनका मूल भारत की संस्कृति से जुड़ा रहा है। इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम देश में बड़ी श्रद्धा एवं आस्था के साथ श्री रामायण को चरितार्थ करते हुए रामलीला का मंचन किया जाना एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण प्रसंग है। इसी तरह हिंदू राष्ट्र नेपाल में भी हिंदू धर्म, दर्शन और संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के प्रति जनमानस में गहरी श्रद्धा और आस्था है जो नेपाल और भारतीय संस्कृति के समन्वय तथा समाजिक सौहार्द को प्रस्तुत करने के लिए एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। रामो विग्रहवान् धर्म अर्थात् भगवान श्री राम का जीवन उनका आचरण कर्तव्य धर्म और राजा पति पिता पुत्र के विभिन्न रूपों में दिव्य एवं अलौकिक चरित्र विश्व मानव समुदाय के लिए आदर्श है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति, परिवार एवं समाज को रामायण की शिक्षा प्रदान की जाती है तथा राम राज्य की कल्पना की जाती है।◆◆◆

डॉ. रश्मीश सिंह सपेड़या जयपुर में उत्कृष्ट शोध हेतु सम्मानित

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 109वीं जयंती के अवसर पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में, प्रख्यात शोधकर्ता डॉ. रश्मीश सिंह सपेड़या को उनके पीएच.डी. शोध 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा समाजवाद के मॉडल का विश्लेषण और उनके वैकल्पिक मॉडल' विषय पर किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री वासुदेव देवनानी, माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा एवं श्री अरुण जैन, अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने डॉ. सपेड़या को प्रशस्ति-पत्र एवं समृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

ध्येयनिष्ठ तपस्वी डॉ. सत्यपाल जी

संघ कार्य की नींव में विसर्जित असंख्य महापुरुषों के समर्पण के कारण ही आज संघ का इतना विराट स्वरूप दिखाई पड़ता है। संघ कार्य के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने बाले ऐसे ही व्यक्ति थे डॉ सत्यपाल जी। आपका जन्म 1 अगस्त 1924 को पंजाब के बटाला जिले में हुआ था। जब आपकी आयु 6 वर्ष थी तब आपके पिता जी का निधन हो गया था। आपकी शिक्षा होमियोपैथी के डॉक्टर के रूप में पूर्ण हुई थी किन्तु संघ के साथ सम्पर्क होने के कारण आपने 1944 में अपना सारा जीवन संघ कार्य को देने के लिए 'पठानकोट' के साथ नरोट जैमल सिंह नामक स्थान से प्रचारक निकलने का मन बनाया।

प्रचारक के रूप में आपका अधिकतर समय हिमाचल प्रदेश, जो तत्कालीन समय मे पंजाब क्षेत्र में आता था वहीं पर बीता। आपने हिमाचल और पंजाब प्रांत में संघ को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई थी। स्वाधीनता से एक वर्ष पूर्व अर्थात 1946 में आप सुजानपुर में प्रचारक के रूप मे आये। सुजानपुर रहते हुए एक बार प्रवास के दौरान कहीं भी रात्रि ठहरने का स्थान न पाकर चल रहे थे। चलते-चलते आप रात को गलती से एक कुएं में गिर गये। पूरी रात आपने उसी कुएं में बिताई और सुबह किसी ने जब यह देखा तो आपकी निकलने मे सहायता की। निकलने के तुरंत बाद आप अपने प्रवास पर पुन: निकल गये। 1948 में जब संघ पर प्रतिबंध लगा तो आप कुल्लू में प्रचारक थे। उस समय भूमिगत रहते हुए आप संघ कार्य करते रहे। आपातकाल के समय जब संघ पर प्रतिबंध लगा तब आपने पुन: होमियोपैथी के डॉक्टर के रूप में गाँव- गाँव घूम कर मरीजो का इलाज किया और बिना किसी शक के दायरे में आये, संघ का काम बढ़ाते रहे। 1983 सोलन विभाग प्रचारक के रूप में आपने कार्य किया। 1993 - 94 हिमगिरि प्रान्त (हिमाचल प्रदेश व जम्मू कश्मीर संभाग) के प्रांत प्रचारक प्रमुख का दायित्व आपने संभाला। इस समय तक आप पूरे कांगड़ा क्षेत्र में डा साहब के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे। जब डॉ सत्यपाल जी कांगड़ा कांगड़ा कार्यालय में थे, तो वहां रहने बाले विद्यार्थियों को आश्चर्य रहता था कि कार्यालय इतना साफ कैसे रहता है? जब विद्यार्थी प्रात: उठ कर सफाई इत्यादि के लिए निकलते तो पाते सब पहले से ही साफ होता था। एक बार उन विद्यार्थियों के कोई मित्र कार्यालय आये। सयोंग से उन मित्र की नींद प्रात: 3-20 के करीब टूटी तो वह बाहर आ गए। बाहर आते ही किसी प्रकार की आवाज़ ने उन्हें चोंका दिया। अंधेरे में वह ध्यान से आगे गए तो देखा डॉ साहब प्रात: उठ 3 बजे उठ कर सफाई में लगे हुए थे। कुछ दिन जब प्रात: उठ कर इस चीज़ पर ध्यान दिया गया, तो जानकारी हुई की यह सफाई रोज प्रात: उठ कर सुबह 3 बजे डॉ साहब करते थे और उसके पश्चात योग स्नान इत्यादि कर के 5 बजे विद्यार्थियों को एकात्मता स्त्रोत के लिए जगाते थे। 1994 में स्वास्थ्य कारणों से डा सत्यपाल कांगड़ा के गुप्त गंगा कार्यालय में हि रहने लगे थे। अपने पुश्तैनी घर से आये किराये से दवाइयां खरीद कर वह कांगड़ा में मरीजों का मुफ्त इलाज करते थे, कांगड़ा गुरुद्वारे में उनके द्वारा शुरू किया गया सेवा केंद्र जिसका नाम वर्तमान में उन्हीं के नाम से है,उसे आज सेवा भारती द्वारा संभाला जाता है व हर शाम वहां मरीजो का मुफ्त उपचार होता है। इस सेवा भाव के कारण वह पूरे कांगड़ा में डॉक्टर जी के नाम से प्रसिद्ध थे। बहुत बृद्ध होने पर भी जब एक बार कोई बंधु उनके कमरे से प्रात: तीन बजे गुजरा तो देखा कमरे में लाइट न होने के बाद भी डा सत्यपाल जी टोर्च से दिन में आने बाले मरीज के लिए दवाइयां ढूंढ रहे थे। 82 वर्ष बाद चलने के लिए उन्हें वॉकर की आवश्यकता रहती थी, फिर भी वह 6 से 8 घण्टे उसके सहारे चलते थे। संघ प्रार्थना उनके जीवन का वह अखंड तप था जो पूरे जीवन मे उन्होने कभी नही छोड़ा। एक बार मूसलाधार बारिश में, 87 वर्ष की आयु में भी वह वॉकर के सहारे प्रार्थना कक्ष में भीगते हुए पहुंचे। उन्हें वहाँ देख कर सब कार्यकर्ता हैरान थे,सबके पूछने पर उन्होंने बताया, 'मेरा अखण्ड तप टूटने न पाए'। उनके अंतिम समय में उनके साथ रहने बाले प्रचारक सुभाष जी बताते हैं की अंतिम दिनों में बिस्तर पर भी वह उनकी प्रार्थना करवाते थे। डा सत्यपाल जी को

प्रचारक निकालने के विशेषज्ञ भी कहा जाता था, मजाक में कार्यकर्ता कहते थे कि वह शनि की भांति पीछे लग जाते थे। फ़ोटो, माइक, माला के बहुत विरोधी थे, उनका मानना था इससे कार्यकर्ता की भावना खराब होती है इस कारण उनका केवल एक छायाचित्र उपलब्ध है, जो छिप के निकाला गया था।

डॉ सत्यपाल जी को मीठा अत्यधिक पसन्द था, ज्यादा बीमार होने पर डॉ द्वारा उनका मीठा बन्द था, किंतु फिर भी कभी-

कभी खा लेते थे। कार्यालय में सबसे वरिष्ठ होने के कारण कोई भी उन्हें मना नही कर पाता था। एक बार अत्यधिक बीमार होने पर तत्कालीन कांगड़ा के विभाग प्रचारक ओम प्रकाश जी, जो उनके सामने नगर विस्तारक के रूप में वहां आये थे, उनके कहने पर डॉ सत्यपाल जी का मीठा पूरी तरह बंद कर दिया गया। जब डॉ सत्यपाल जी ने मीठा मांगा तो कार्यकर्ता ने उन्हे मना कर दिया जिस कारण थोड़ा क्रोध कर के पूछने पर उन्हें कार्यकर्ता ने बताया कि विभाग प्रचारक जी ने मना किया है। इतना सुन कर वह शांत हो कर वहां से चले गए। कुछ दिन बाद ओम प्रकाश जी के मिलने पर उन्होंने ने इस बारे में उनसे पूछा, ओम प्रकाश जी क्या मेरा मीठा आपने बन्द करवाया है?इस पर ओम प्रकाश जी ने उत्तर दिया, 'जी डॉ साहब मीठा आपके लिए हानिकारक है और मैने ही सबको मना किया था।' यह सुन कर वह थोड़ा मुस्कुराए और कहा, 'आप मेरे अधिकारी है जैसा आप कहें।' उम्र में वरिष्ठ होने के बाद वह संघ पद्धति में दायित्ववान कार्यकर्ता की आज्ञा का पूर्ण पालन करते थे। कार्यलय आये संघ अधिकारियों को प्रणाम करने के लिए डॉ जी अपने अन्तिम समय तक कक्ष से बाहर आकर हि प्रणाम करते रहे। 82 साल की आयु में भी वह छड़ी के सहारे निरंतर शाखा जाते रहे। हर कार्यकर्ता पर पैनी दृष्टि, छोटी से छोटी व्यवस्था का ध्यान रखना, कथनी और करनी सदा एक सी, युवा संघ में समय दें इसकी निरन्तर चिंता करते रहे। उनका सारा जीवन बिना किसी शोर के केवल अपने धेय्य के लिए समर्पित अनुपम उदाहरण है। अपने देहावसान की सुबह तक यानि 93 वर्ष की आयु तक अपने कपड़े स्वयं धोते रहे। 87 वर्ष तक किसी को अपनी थाली नही धोने दी। अपना कार्य सदा स्वयं ही किया। पूरा जीवन अपने प्रति अत्यधिक कठोर रहे। एक टेलीफोन डायरी, 2 जोड़ी कपड़े, अपनी माता का फोटो और होमिओपेथी की दवाइयों के अतिरिक्त कोई सम्पति नही थी। पुश्तेनी घर की जमीन भी मंदिर बनाने के लिए दे दी थी। डॉ सत्यपाल जी का जीवन धेयनिष्ठ तपस्वी, अपने प्रति कठोर, अनुशासन और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में याद किया जाता है।◆◆◆

सारागढ़ी के युद्ध में बहादुर सिक्खों का अमर बलिदान

12 सितम्बर 1897 का दिन भारतीय सैन्य इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। इस दिन सारागढ़ी के छोटे-से किले पर तैनात सिख रेजीमेंट की चौथी बटालियन के 21 वीर जवानों ने अदम्य साहस और अटूट निष्ठा का परिचय दिया। सुबह आठ बजे जब हजारों की संख्या में अफगान पठानों की सेना ने किले को तीन ओर से घेर लिया, तब नेतृत्वकर्ता हवलदार ईशेर सिंह ने बिना विचलित हुए मोर्चा संभाला।

दुश्मनों ने आत्मसमर्पण का प्रस्ताव रखा, लेकिन ईशेर सिंह ने स्पष्ट शब्दों में कहा – 'हम अन्तिम सांस तक धरती की रक्षा करेंगे।' किला 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' के जयकारों से गूंज उठा। युद्ध भीषण था। मात्र 21 सिख जवानों ने दस से पन्द्रह हज़ार अफगानों का सामना किया। छह घण्टे तक चली इस लड़ाई में जवानों ने लगभग 600 दुश्मनों को मौत के घाट उतारा। जब तक उनके पास एक भी गोली थी, वे लड़ते रहे। अन्ततः जब हथियार चुप हो गए, तो हर सैनिक ने एक-एक कर वीरगति प्राप्त की। यह बलिदान केवल सैनिकों की शौर्यगाथा नहीं था, बल्कि अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और मातृभूमि के प्रति समर्पण का अद्वितीय उदाहरण था। ब्रिटिश हुकूमत ने इन सभी 21 शहीदों को मरणोपरांत 'इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट' प्रदान किया, जो उस समय परमवीर चक्र के समान सर्वोच्च सम्मान था। उनकी स्मृति में फरीदकोट और अमृतसर में मेमोरियल स्थापित किए गए। 1902 में फव्वारा चौक पर उनकी शहादत को समर्पित एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा भी बनाया गया, जो आज भी श्रद्धा और प्रेरणा का प्रतीक है।

यह युद्ध केवल सैन्य दृष्टि से ही नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अद्वितीय महत्व रखता है। 21 सिख योद्धाओं ने यह सिद्ध किया कि संख्या नहीं, बल्कि आत्मबल और कर्तव्यनिष्ठा ही विजय का आधार है। उनकी शहादत आज भी भारतीय सेना और हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत है। सारागढ़ी का बलिदान हमें यह संदेश देता है कि जब मातृभूमि की रक्षा का प्रश्न हो, तब प्राणों की आहुति भी एक गौरवपूर्ण कर्तव्य बन जाती है। सारागढ़ी के 21 अमर शहीद सिख आज भी वीरता के दीपस्तंभ बनकर अमर हैं और उनका बलिदान आने वाली पीढ़ियों को सदैव राष्ट्रनिष्ठा, साहस और त्याग का मार्ग दिखाता रहेगा। ◆◆◆

मॉनीरंग शिखर पर चार पर्वतारोहियों ने लहराया तिरंगा

हिमाचल प्रदेश की आठवीं सबसे ऊँची चोटी मानीरंग (6,593 मीटर / 21,630 फीट) को 20 सितम्बर को दोपहर 2.26 बजे चार युवाओं ने सफलतापूर्वक फतह किया। शिखर पर पहुँचकर जब उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया, तो यह क्षण न केवल उनका व्यक्तिगत गौरव बना, बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गर्व का विषय रहा।

विशेष बात यह रही कि यह अभियान अल्पाइन शैली में किया गया। यह पर्वतारोहण की सबसे कठिन शैली मानी जाती है, जिसमें पर्वतारोही बिना गाइड, पोर्टर या किसी भी अतिरिक्त सहायता के, स्वयं ही सारा सामान, उपकरण और भोजन ढोकर चढ़ाई करते हैं। इस अभियान का नेतृत्व हमीरपुर के विशाल ठाकुर ने किया, जिनके साथ बृजमोहन केवला (मतियाना), अमन चौहान (शिमला) और तेजा सिंह (बंजार) शामिल रहे। टीम ने भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन से अनुमति लेकर मात्र छह दिनों में इस चुनौतीपूर्ण कार्य को अंजाम दिया।

यह सफलता इस बात का संदेश देती है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, अनुशासन और आत्मविश्वास से असंभव भी संभव हो सकता है। हिमाचल के इन युवाओं ने न केवल प्रदेश का मान बढ़ाया है, बल्कि नई पीढ़ी को यह सिखाया है कि सच्चा रोमांच अपने ही प्रयासों पर विश्वास करके हासिल होता है। यह उपलब्धि युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि यदि लक्ष्य ऊँचा हो और हौसले बुलंद हों, तो हर मानीरंग शिखर तक पहुँचना संभव है।◆◆◆

शिक्षक शशिपॉल को राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान

दिल्ली में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने सोलन ज़िले के शिक्षक शशि पॉल को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और बच्चों में सीखने की रुचि बढ़ाने के लिए उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया गया है। उन्होंने न केवल हिमाचल का नाम रोशन किया है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। शशिपॉल जी को आगामी भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।◆◆◆

दिल्ली में जैनजी का कमाल दिल्ली विश्वविद्यालय में

एबीवीपी की ऐतिहासिक जीत

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में एबीवीपी ने इस बार अध्यक्ष, सचिव और संयुक्त सचिव पद पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। एनएसयूआई ने उपाध्यक्ष का पद जीता है। स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया और ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन को संयुक्त रूप से कोई सीट नहीं मिली। छात्र संघ के नए अध्यक्ष मान ने कहा कि एबीवीपी को सभी कॉलेजों के छात्रों का समर्थन प्राप्त था। अब हमारी पहली प्राथमिकता डीयू छात्रों के लिए मेट्रो रियायती पास की हमारी प्रतिबद्धता को पूरा करना होगा। इसके अलावा, सभी एथलीटों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण उपकरण उपलब्ध कराना भी मेरी प्राथमिकता होगी। दिल्ली विश्वविद्यालय के चुनाव में आर्यमन को अध्यक्ष और उपाध्यक्ष राहुल झांसला, कुणाल चौधरी सचिव और दीपिका झा को सह सचिव के पद पर भारी मतों एवं समर्थन से जीत हासिल हुई है। हाल ही में राहुल गांधी ने जैनजी को सरकार का विरोध करने के लिए उकसाने की बात कही थी इधर उसके विपरीत एबीवीपी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज करके यह साबित कर दिया है कि आज का पढ़ा लिखा युवा वर्ग राष्ट्र के निर्माण का समर्थन करता है।◆◆◆

नागरिक कर्तव्यों से सशक्त होता भारत

सी.ए. संजीव सिंह ठाकुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पंच परिवर्तन के रूप में समाज को एक दिशा प्रदान की है, जो प्रमुखत: 'स्व' का बोध, कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण और नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करना है। यदि भारत का प्रत्येक नागरिक इन पांचों सिद्धांतों को अपने व्यवहारिक जीवन में आत्मसात कर लेगा तो निश्चित रूप से भारत विश्व गुरू के स्थान पर सुशोभित हो जायेगा। पंच परिवर्तन के अंतर्गत नारिक कर्त्तव्य का भी उल्लेख किया गया है। आज जब हम अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं, तब यह आवश्यक है कि उतनी ही गंभीरता से अपने कर्तव्यों का भी पालन करें। एक राष्ट्र की मजबूती केवल उसकी आर्थिक शक्ति या सैन्य क्षमता से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से तय होती है कि उसके नागरिक कितने अनुशासित, जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ हैं। देखा जाता है कि हममें अधिकार बोध बहुत है किंतु कर्तव्यबोध कई बार कम होता है। जबकि संविधान हमें मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्यों की भी सीख देता है। हमारे धार्मिक ग्रंथ हमें नागरिकता और सामाजिक आचरण का पाठ पढ़ाते हैं। जिम्मेदार नागरिक के प्रमुख कर्त्तव्य कर्तव्यपालन केवल कानून मानने की औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र और समाज के प्रति हमारे आत्मिक दायित्व का निर्वाह है। यह हमें देश की एकता और अखंडता बनाए रखने, पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, स्वच्छता, भाईचारे की भावना और उत्कृष्टता की ओर प्रयास जैसे मूल्यों की ओर प्रेरित करता है।

जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का पालन आवश्यक है। राष्ट्र की एकता, पर्यावरण संरक्षण, समाज सेवा और अनुशासन के माध्यम से व्यक्ति न केवल समाज में विश्वास और सौहार्द पैदा करता है, बल्कि भारत को विश्व में आदर्श राष्ट्र बना सकता है।

एक जिम्मेदार नागरिक वह है जो अपने हित से पहले राष्ट्र के हित को रखता है। मतदान करना, कर समय पर चुकाना, यातायात नियमों का पालन करना, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना आदि ये सभी छोटे-छोटे कार्य मिलकर एक बड़े परिवर्तन का आधार बनते हैं। जब व्यक्ति अपने कर्तव्यों को निभाता है, तो वह न केवल दूसरों के अधिकारों की रक्षा करता है, बल्कि समाज में विश्वास और सौहार्द का वातावरण भी निर्मित करता है।

राष्ट्र की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा करना, सभी नागरिकों के बीच समरसता, भाईचारे और सौहार्द की भावना फैलाना, प्राकृतिक संसाधनों, वनों, नदियों और वन्यजीवों की रक्षा करना, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और सुधार की भावना विकसित करना, करों का समय पर भुगतान करना और कानूनों का पालन करना, समाज और राष्ट्र के हित में सेवा और सहयोग के भाव से कार्य करना।

हमारी प्राचीन परंपराएं सिखाती हैं। कि व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक कल्याण के लिए कार्य करना ही सच्चा धर्म है। यदि प्रत्येक नागरिक यह संकल्प ले कि वह अपने आचरण में ईमानदारी, अनुशासन और सेवा भाव को स्थान देगा, तो राष्ट्र न केवल सशक्त और समृद्ध होगा, बल्कि विश्व आदर्श के रूप में स्थापित होगा। वृहदारण्यक उपनिषद् का यह आह्वान हमें स्मरण कराता है-

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्'।।

सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें, और किसी को भी दु:ख का भागी न बनना पड़े। ऐसे कल्याणकारी समाज के निर्माण में मेरा हर कर्म, हर श्वास राष्ट्र को समर्पित हो। यही एक जिम्मेदार नागरिक का वास्तविक लक्ष्य है। कर्म मेरा हो राष्ट्र की शान, हर श्वास में हो देश का मान। यही हो जीवन का अरमान, यही हो मेरी सच्ची पहचान। ◆◆◆

लेखक सहायक प्रोफेसर, शारदा विश्वविद्यालय आगरा हैं।

श्री रघुनाथ जी एवं विजयादशमी परंपरा देव समागम का अनूठा पर्व

कुल्लू दशहरा

- डॉ. सूरत ठाकुर

हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी में देवी-देवताओं का समागम, कुल्लू दशहरा पूरे विश्व में अलग स्थान रखता है।

कुल्लू का विजय दशमी उत्सव अन्तरराष्ट्रीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और व्यापारिक सामंजस्य का अनूठा संगम है। विजय दशमी अर्थात् 'विदा दसमी' उत्सव आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि से आरम्भ होकर पूर्णिमा के अगले दिन लंका दहन तक होता है। दशमी तिथि को भगवान श्रीराम की रथ यात्रा देवी-देवताओं की उपस्थितिमें विजय यात्रा के साथ आरम्भ होता है।

सन् 1637 ई. से 1662 ई. तक कुल्लू रियासत में राजा जगतसिंह का शासन रहा। उस समय कुल्लू की राजधानी नग्गर में थी। राज्य की सीमा का आउटर सिराज तक विस्तार होने के कारण व्यास और गोमती नदी के संगम मकड़ाहर नामक स्थान पर अस्थायी राजधानी बनाई गई। राजा जगत सिंह ने अन्य छोटे-छोटे ठाकुरों और राणाओं पर जीत हासिल की। सुल्तानपुर में लग के राजा सुल्तान चंद का आधिपत्य था। राजा जगतसिंह ने उसे हराकर लग सहित सुल्तानपुर को अपने कब्जे में ले लिया और सन् 1650 ई. में अपनी राजधानी नग्गर से स्थानांतरित करके सुल्तानपुर में स्थापित की। ब्रह्महत्या के शाप के कारण राजा की अंगुली में कोढ़ हो गया। पयहारी बाबा ने ब्रह्महत्या से मुक्ति का उपाय सुझाया कि अयोध्या के त्रेतानाथ मंदिर में अश्वमेध यज्ञ के समय की निर्मित राम-सीता की मूर्तिों को यहां लाकर प्रतिष्ठापित किया जाये तो राजा शाप मुक्त हो सकता है।

गुटका सिद्धि के ज्ञाता दामोदर दास गोसाईं को अयोध्या से राम-सीता की मूर्ति लाने का काम सौंपा। वहां पर त्रेतानाथ मंदिर में एक वर्ष तक पुजारियों की सेवा करता रहा और पूजा विधि को समझता रहा। एक दिन अवसर पाकर उसने राम-सीता की मूर्ति उठाई और गुटका सिद्धि के प्रयोग से तत्काल हरिद्वार पहुंच गया। हरिद्वार में पकड़े जाने पर पर दामोदर दास ने बताया, 'मैं इन मूर्तियों को कुल्लू के राजा जगतसिंह को ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति दिलाने हेतु ले जा रहा हूं। भगवान रघुनाथ भी कुल्लू जाना चाहते हैं, यदि विश्वास नहीं तो मूर्तियों को उठा कर ले जाओ।' जोधावार मूर्ति उठाने लगा, परन्तु उससे उठाई नहीं गईं। जब दामोदर दास नेमूर्तियोंको उठाने का प्रयत्न किया, तो उसने मूर्तितत्काल उठा ली। जिस दिन दामोदर दास मूर्तियां लेकर मकड़ाहर पहुंचा, उस दिन आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि थी। राजा जगत सिंह ने रघुनाथ की मूर्ति का भव्य स्वागत किया और उसकी नृसिंह भगवान के साथ विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इससे राजा शापमुक्त हो गया। उसने अपने राज्य की सारी जागीर भगवान रघुनाथ को समर्पित कर दी और स्वयं छड़ीबरदार (सेवक) बनकर राजकार्य चलाने लगा। कुछ समय बाद मूर्तियों को मकड़ाहर से लाकर मणिकर्ण में रखा गया। 1951 में राजा ने सुल्तानपुर में अपनी राजधानी स्थापित की। उसने इसी तिथि को रियासत के 360 देवी-देवताओं को कटागली शाड़ 350 बीघे के रोपे को रानी ने देव समागम के लिए दान में दे दिया जहां कुल्लू दशहरा का आयोजन होता है।

अस्त्र-शस्त्रों की पूजन परम्परा : रामायण के अनुसार कहा जाता है कि नवरात्रों के दौरान श्री राम ने रावण पर विजय प्राप्त करने हेतु नौ दिन तक व्रत किया था। श्री राम ने दुर्गा सहित शस्त्रों की पूजा करके शक्ति सम्पन्न होकर दशहरे के दिन रावण का वध किया था। तभी से अस्त्र शस्त्र पूजा की परंपरा प्रचलित हुई। इसी दिन देवराज इंद्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की थी। महाभारत का युद्ध भी इसी दिन प्रारम्भ हुआ था। इसी दिन अर्जुन ने धनुर्विद्या के कौशल से द्रौपदी के स्वयंवर में उसे जीता था। राजा विक्रमादित्य और छत्रपति शिवाजी ने भी इसी दिन देवी दुर्गा को प्रसन्न करके तलवार प्राप्त की थी। शस्त्र पूजन की परंपरा को कायम रखते हुए भारतीय सेना की सभी बटालियनों में प्रथम नवरात्र से लेकर

दशमी तक शस्त्र पूजा करने की परंपरा है। इस शुभ दिन हिन्दु चेतना को एकनिष्ठ करने के लिए डॉ. बलिराम हेडगेवार ने सन 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी।

कुल्लू दशहरा में भी रघुनाथ मंदिर में हिडिम्बा के राजमहल में अने पर राजपुरोहित राजा से ध्वजा, पंखे और अन्य निशान तथा अस्त्र-शस्त्रों की अष्टगंध से पूजा करवाता है। राजमहल में भी शस्त्र पूजा होती है। फिर राजा चार व्यक्तियों को चार तीर देता है। वृश्चिक राशि का व्यक्ति पूर्व दिशा की ओर, मेष राशि का व्यक्ति दक्षिण दिशा की ओर, कर्कराशि का व्यक्ति पश्चिम दिशा की ओर तथा तुला राशि का व्यक्ति उत्तर दिशा की ओर तीरों को लेकर प्रस्थान करते है।

राज परिवार की दादी देवी हिडिम्बा : इस दिन सुबह ही भगवान रघुनाथ के मंदिर में भगवान रघुनाथ और माता सीता की मूर्ति का श्रृंगार किया जाता है। इस दिन प्रातत्काल देवी हिडिम्बा की पालकी को लेकर लोग जब रामशिला पहुंचते हैं। तब राजा की ओर से देवी को आमंत्रित करने के लिए एक सेवक चांदी की छड़ी लेकर जाता है और मान सम्मान के साथ देवी हिडिम्बा के रथ को रघुनाथ के मंदिर में लाया जाता है, कुल्लू राजवंश देवी हिडिम्बा को अपनी दादी मानता है। राजमहल में देवी के आने पर राजपरिवार का कोई भी सदस्य देवी से नहीं मिलता। राज परिवार के सभी सदस्य ठारह करडू की परौल के पीछे बैठ जाते हैं। जब देवी महल से बाहर आती है, तब गूर को खेल आती है। वह पुकारता है, पोत्रुआ! 'दादी शादा सा, बाहर एज़्' अर्थात् दादी बुला रही है, बाहर आजा। आवाज़ सुनकर डयोढ़ी का दरवाज़ा खोल कर राज परिवार के सदस्य बाहर आते हैं। पारंपरिक पूजा के बाद देवी राजा को आशीर्वाद देते हुए कहती है, दूध भौत खांदा रौह, सच्चा राज चलांदा रौह।' अर्थात् दूध भात खाता रह, सच्चा राज चलाता रह। यह कह कर देवी ढालपुर में अपने ठहरने के स्थान को प्रस्थान करती है।

ठाकर निकलना : श्रीराम विष्णु के सातवें अवतार हैं, इसलिए रथ यात्रा को 'ठाकर निकलना' कहते हैं। इसी दिन भगवान रघुनाथ की मूर्ति को छोटी पालकी में बिठाकर शोभायात्रा के साथ मेला स्थल ढालपुर लाया जाता है। सबसे आगे सुस्सजित नारसिंह का घोड़ा, देवी-देवताओं के वादक ढोल, नगाड़ा, दराघ, ढौंस, दमामा, भाणा, रणसिंगा, करनाल, नौपत, शहनाई, छणे आदि को बजाते हुए चलते हैं। साथ ही झण्डे, छड़ी उठाये सेवकों का टोला चलता है। फिर राजा तथा राजपरिवार के सभी सदस्य, भक्त जन, श्रीरघुनाथ की पालकी के साथ देवी-देवताओं के रथ और साथ ही उत्सव में आए हुए रंग-विरंगे परिधानों से सजे-धजे स्त्रियां, पुरूष, बच्चे, बजुर्ग सभी एक लम्बे जलूस के रूप में ढालपुर मैदान की ओर चलते हैं। मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुजन रघुनाथ व देवी-देवताओं की पालकी के ऊपर पुष्प वर्षा करते हैं।

रथ के अन्दर राम-सीता की मूर्तियों के साथ पुजारी, भाटू,थावी, नीहर आदि बैठते हैं। जैसे ही देवी हिडिम्बा का रथ यहां पहुंचता है। उसी समय राजा द्वारा रस्से का स्पर्श करने के साथ ही रथ यात्रा प्रारम्भ होती है। रथयात्रा के समय धूमल नाग द्वारा भीड़ को नियंत्रित करने एवं मार्ग प्रशस्त करने में विशेष भूमिका निभाई जाती है। मेले में कुल्लुवी नाटी, लालहडी, कौरथा, मौंगला, चरासे-तरासे, बांढू, राख्स, नौड़, फागली आदि नृत्य किए जाते है। यथा- होरा जाचा बोला ध्याड़ी पतौहरै विदा दसमी राची। रात भर नौचणी लालहड़ी दिल रखणा राज़ी। सन् 2014 में यह नृत्य लिमका बुक ऑफ वर्लड रिकार्ड तथा 2015 में गिनीज बुक ऑफ वर्लड रिकार्ड में अपनी दर्ज हो चुका है।

नृसिंह की जलेब चंदरौली नृत्य देवताओं द्वारा श्री रघुनाथ जी की परिक्रमा करना दशहरे की आकर्षणपरंपरा है। दशहरे के छठे दिन मुहल्ले के अवसर शरद पूणिमा को सभी देवी-देवता भगवान रघुनाथ के अस्थायी शिविर में उपस्थिति देते हैं। भगवान रघुनाथ से मिलने के बाद सभी देवता राजा की चानणी के पास जाकर नृसिंह भगवान की भी वन्दना करते हैं। सातवें दिन ढालपुर मैदान में देवी देवता नृत्य खडक़ी जाच होता है। इसी दिन लंका दहन के समय भगवान रघुनाथ की मूर्ति को बड़े रथ में सजाकर देवी-देवताओं की उपस्थिति में धूमधाम ढालपुर के दूसरे छोर पर ले जाकर लंका बेकर में भैंसा, मेढ़ा, मुर्गा, मछली और कसाकड़ा की बलियां देकर और वहां रखे गत्ते के रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाथ के मुखौटे और वहां रखी झाडियों में आग लगाकर लंका दहन की प्रक्रिया सम्पन्न करके बड़े रथ को रघुनाथ के अस्थायी शिविर तक वापिस लाया जाता है। वहां पर माता सीता की मूर्ति को भी रथ में रखा जाता है। फिर रथ को उसी स्थान पर पहुंचाया जाता है, जहां से प्रथम दिन यात्रा आरम्भ हुई थी। वहां पर राम-सीता की मूर्तियों को बड़े रथ से निकालकर छोटी पालकी में विराजित करके को उसी धूमधाम से रघुनाथपुर लाया जाता है। ◆◆◆ **लेखक अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति हिमाचल प्रांत के अध्यक्ष हैं।**

जीएसटी 2.0 जनता के प्रति जवाबदेही और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रयास

सरकार ने इनकम टैक्स में राहत देने के बाद इनडायरेक्ट टैक्स व्यवस्था में भी सबसे बड़ा सुधार करते हुए 'जीएसटी 2.0' लागू करने का साहसिक निर्णय लिया है। किसी भी लोकतांत्रिक सरकार के लिए यह कदम आसान नहीं होता क्योंकि टैक्स में राहत का सीधा असर राजकोषीय संग्रह पर पड़ता है, लेकिन मोदी सरकार ने लगातार दूसरी बार ऐसा करके यह संदेश दिया है कि जनता के हित उसके हर फैसले की धुरी हैं। यह दुर्लभ है कि इतने कम समय में दो-दो बड़े टैक्स सुधार लागू किए जाएं। पहले डायरेक्ट टैक्स में राहत और अब इनडायरेक्ट टैक्स में सबसे बड़ा बदलाव। यही वह नीति है जिसने मोदी सरकार को आम आदमी के बीच विश्वास का प्रतीक बना दिया है।

नवनीत सहगल
चेयरमैन प्रसार भारती

आम आदमी के जीवन पर सीधा असर : इस रिफॉर्म का सबसे बड़ा फायदा आम आदमी को मिलता दिख रहा है। पहले जहां दैनिक उपभोग की वस्तुओं पर जहां 12 या 18 प्रतिशत तक टैक्स देना पड़ता था अब वे पांच प्रतिशत या जीरो टैक्स के दायरे में आ गई हैं। इसका असर जल्द ही रसोई से लेकर दवा की दुकान तक दिखने लगेगा। वहीं मोदी सरकार ने खाद्य पदार्थों में सीधी राहत दी है। पैकेज्ड पनीर जैसी चीजें अब पहले से सस्ती होंगी। जीवनरक्षक दवाएं और कैंसर, हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों की दवाएं जीएसटी मुक्त कर दी गई हैं। स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम को भी टैक्स से बाहर करने का फैसला हुआ है। घरेलू उपकरण जैसे टीवी, एसी जैसी रोजमर्रा की बड़ी जरूरतें 28 से घटकर 18 प्रतिशत जीएसटी के दायरे में आ गई हैं। ये कदम केवल राहत का प्रतीक नहीं बल्कि सरकार की उस नीतिगत सोच को भी दर्शाते हैं जिसमें 'जनता की जेब में बचत' को विकास का अहम आधार माना गया है।

उपभोग और मांग में बढ़ोतरी : टैक्स स्लैब घटने का असर सीधे उपभोग पर पड़ना तय है। वित्त विशेषज्ञों का मानना है कि इससे मांग में तेजी आएगी और छोटे व्यापारियों से लेकर बड़ी कंपनियों

तक को इसका फायदा मिलेगा। जहां विपक्ष कह रहा है कि यह सिर्फ 'इधर से उधर' का खेल है, वहीं आंकड़े बताते हैं कि टैक्स घटने से रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों में वास्तविक कमी आ रही है।

युवाओं के लिए एक सशक्त अवसर : जीएसटी 2.0 का नया स्ट्रक्चर भारत के युवाओं के लिए एक सशक्त अवसर है। दरों को सरल बनाकर, अनुपालन प्रक्रिया को सहज बनाकर और बीमा जैसी आवश्यक सेवाओं पर छूट देकर, यह प्रणाली घरेलू क्रय शक्ति को बढ़ावा देती है। इससे युवाओं की जेब पर सीधा असर पड़ता है। अब उन्हें रोजमर्रा की वस्तुएं और सेवाएं पहले से कम कीमतों पर उपलब्ध होंगी। एजुकेशनल मटेरियल पर जीरो टैक्स दर उनके सपनों की उड़ान में मददगार साबित होंगे।

जीएसटी 2.0 सरकार की जनता के प्रति जवाबदेही और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इस सुधार से दैनिक उपभोग की वस्तुएं सस्ती हुई हैं, जीवनरक्षक दवाएं और बीमा टैक्स मुक्त हुए हैं, जिससे आम आदमी की जेब पर सीधा असर पड़ा है। युवाओं, स्टार्टअप्स और छोटे उद्यमों के लिए यह अवसर पैदा करता है, नवाचार और रोजगार को बढ़ावा देता है। उद्योग जगत को सरल नियम और इनवॉइस प्रक्रिया से लाभ मिलेगा। महंगाई नियंत्रित होगी और जीडीपी में 0.5-1.2 प्रतिशत की वृद्धि संभव है। यह सुधार भारत को आर्थिक रूप से मजबूत और वैश्विक स्तर पर मॉडल बना रहा है।

स्टार्टअप्स और छोटे उद्यमों को भी लाभ : इस नई व्यवस्था से स्टार्टअप्स और छोटे उद्यमों को भी लाभ होगा क्योंकि कम कर दरें और आसान नियम नवाचार को बढ़ावा देंगे। युवा उद्यमियों के लिए यह एक अनुकूल वातावरण प्रदान करता है जिसमें वे अपने विचारों को व्यवसाय में बदल सकते हैं। बीमा जैसी सेवाओं पर छूट उन्हें स्वास्थ्य और वित्तीय सुरक्षा की ओर प्रोत्साहित करती है। डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों को यह नया जीएसटी ढांचा मजबूत आधार दे रहा है। यह न सिर्फ आज के परिवारों के लिए सुधार है बल्कि उस भारत की नींव है जिसका निर्माण यह युवा पीढ़ी करेगी। वास्तव में जीएसटी 2.0 युवाओं को उपभोक्ता ही नहीं, देश के भविष्य निर्माता बनने की राह पर अग्रसर करता है।

निवेश और उद्योग जगत को बल : जीएसटी 2.0 से केवल ग्राहकों को ही फायदा नहीं होगा, उद्योग जगत के लिए भी यह राहत का पैकेज है। छोटे और मझोले उद्यमों को जटिल टैक्स दरों और कैटगरी क्लासिफिकेशन के बोझ से मुक्ति मिलेगी। इनपुट टैक्स क्रेडिट सरल होगा। साथ ही अब कंपनियों को इनवॉइस मिलान की जटिलता से नहीं जूझना पड़ेगा, जिससे कारोबारी माहौल आसान होगा। विदेशी निवेशक भी सरल कर संरचना को भारत की आर्थिक क्षमता का मजबूत संकेत मान रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि भारत का टैक्स ढांचा अब दुनिया के लिए एक मॉडल बन सकता है। यह सुधार सिर्फ टैक्स कलेक्शन नहीं बल्कि निवेश और रोजगार सृजन का नया द्वार खोलेगा।

महंगाई पर नियंत्रण की रणनीति : मुद्रास्फीति किसी भी सरकार की सबसे बड़ी चुनौती होती है। जीएसटी 2.0 का लक्ष्य केवल उपभोग बढ़ाना नहीं बल्कि महंगाई को नियंत्रित करना भी है। दरअसल, जब जरूरी वस्तुएं सस्ती होती हैं तो आम उपभोक्ता की जेब पर दबाव कम होता है और परोक्ष रूप से मुद्रास्फीति की दर घटती है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के अनुमान हैं कि इस सुधार से महंगाई में 0.5 से 1 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। यह भारत की विकास दर को और स्थिर आधार देगा।

जीडीपी पर प्रभाव के अनुमान : अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि जीएसटी 2.0 से आने वाले वित्तीय वर्ष में भारत की जीडीपी में 0.5 से 1.2 प्रतिशत अंक तक की बढ़ोतरी संभव है। चूंकि उपभोग किसी भी अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत है ऐसे में टैक्स छूट के कारण घरेलू खपत तेज होगी और उद्योग जगत को मांग के नए अवसर मिलेंगे। यह प्रभाव विशेषकर ऑटोमोबाइल, एफएमसीजी और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर में स्पष्ट दिखाई देगा।◆◆◆

भारत के किसानों मछली पालकों, दुग्ध पालकों के हित में ट्रंप के सामने मजबूत इरादों से खड़े रहे मोदी

भारतीय कृषि व डेयरी क्षेत्र में अमेरिकी उत्पाद खपाने के लिये ही अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ आंतक फैला रहे हैं। यही कारण है कि पहले संयम दिखाने के बाद भारत ने निरंकुश ट्रंप सरकार को चेता दिया है कि भारतीय किसानों व दुग्ध उत्पादकों के हितों की बलि नहीं दी जा सकती। हमारे लिये यह देश की एक बड़ी कृषि व डेयरी उद्योग से जुड़ी आबादी के जीवन-यापन का भी प्रश्न है। अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्रंप द्वारा अतार्किक टैरिफ बढ़ाने पर कड़ी प्रतिक्रिया देकर देश के किसानों को आश्वस्त किया है कि उनके हितों से किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जाएगा। भारत में हरित क्रांति के सूत्रधार, प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी के मौके पर उनका यह बयान और महत्त्वपूर्ण व प्रासंगिक हो जाता है।

कृतज्ञ राष्ट्र स्वीकार करता है कि स्वामीनाथन के हरित क्रांति में योगदान से भारत खाद्यान्न की कमी से उबरकर आज खाद्यान्न अधिशेष वाला राष्ट्र बन गया है। बहरहाल, यह तय हो गया है कि भारत वाशिंगटन के उन इरादों पर पानी फेरने के लिये खड़ा हो गया है, जिनके तहत अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों से कम टैरिफ के साथ भारत के बाज़ार को पाटना चाहता है। निस्संदेह, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले तीन प्रमुख क्षेत्रों कृषि, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन से जुड़े करोड़ों लोगों की अजीविका की रक्षा करने के लिये प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता सराहनीय है। बहरहाल, अमेरिका के खतरनाक मंसूबे अब उजागर होने लगे हैं। वह भारत के बाज़ार को अपने डेयरी उत्पादों के लिये डंपिंग ग्राउंड बनाने पर आमादा है। एक तरफ चीन पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी युद्ध और प्रत्यक्ष सैन्य युद्ध तथा दूसरी तरफ चीन और अमरीका द्वारा प्रारम्भ किया गया, काफी समय से विश्व व्यापार युद्ध या कहिए आर्थिक विश्व युद्ध। जब से अमरीका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने मित्र देश कनाडा, मेक्सिको और यूरोपीय यूनियन से लेकर चीन, पाकिस्तान तक बड़े-बड़े टैरिफ लगाए हैं। आमतौर पर यह टैरिफ 10 प्रतिशत से लेकर चीन पर 145 प्रतिशत तक अधिकतम लगाया गया है। भारत पर 50 प्रतिशत लगाया गया है। उन्होंने अन्य प्रकार के भी आयात प्रतिबंध लगाए हैं और खुलेआम इसे वे टैरिफ वार या वर्ल्ड ट्रेडवार घोषित कर रहे हैं।

पिछली बार डोनाल्ड ट्रम्प ने स्पष्ट बोला था कि यह ट्रेडवार, सैन्य युद्धव के मुकाबले अमरीका के हित में अधिक है। इससे सारे विश्व की आपूर्ति श्रृंखला, व्यापार के तरीकों पर असर पड़ रहा है। उन्होंने 25 प्रतिशत स्टील आयात पर सारे विश्व में ही प्रतिबन्ध लगा दिया है। और अमेरिका क्योंकि 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था है और उसका 2.6 ट्रिलियन डॉलर का व्यापार है, इसलिए वह सारी दुनिया को छोटा समझ कर सबके खिलाफ एकतरफा घोषणाएं कर रहा है। भारत के सख्त रवैये से डोनाल्ड ट्रंप को दोबारा सोचना पड़ रहा है और भारत तथा अमेरिका के बीच व्यापार समझौते पर बातचीत की जा रही है। ◆◆◆

संघ : एक प्रयास भारत का

......हाँ ये संघ है
जहाँ शौर्य की ज्वाला है, तेज का उजियारा है,
जहाँ मिलन है विचारों का, और कर्मों का सहारा है।
जहाँ एकता ही पहचान, और राष्ट्र सेवा ही पुकार है।
सौ वर्षों के संकल्पों का परिणाम है –
भारत को जानने, समझने का एक विशेष प्रयास है।
संघर्षों का सार है अनुभवों का प्रवाह है
जड़ से जुड़े रहने में उद्धार है।
ये प्रयास है उनके लिए – जो भारत के लिए जीते है
जिनके दिलों में भारत की गूंज बसती है।
जिन्हें भारत की सफलता का खुमार है,
संघ केवल संगठन नहीं वो एक साधना है, एक जीवनशैली,
जहां 'स्व' मिटता है और 'राष्ट्र' बनती है असली पहचान।
जहां शाखा की हर प्रार्थना में संकल्प जलता है,
जहाँ बाल स्वयंसेवक भी भविष्य का दीप बनता है।
चलो जुड़ें उस प्रयास से, जो भारत के नव निर्माण की राह है,
संघ की इस तपस्या में ही, राष्ट्र की सच्ची चाह है।

राष्ट्रवाद

मालूम है? क्या होता है राष्ट्रवाद?
जो गाता है गीत, भारत के गौरवमयी अतीत के
ललकारता है, वर्तमान के देश-विरोधियों को
थरथरी उत्पन्न कर देता है राष्ट्र के दुश्मनों में
प्रशस्त करता है राहें, भारत के उज्ज्वल भविष्य की।
भारत-भूमि पर जो बुरी नजर रखते हैं
उन्हें मिट्टी का एक कण भी छूने नहीं देता है राष्ट्रवाद
जो लोग राष्ट्र को मिडटी में मिलाने में लगे हैं,
उनकी मिट्टी पलीद करता है राष्ट्रवाद।
राष्ट्रवाद के आगे स्वार्थ आलस लालच की
एक भी नहीं चलती है, राष्ट्र को कुतरने में लगे
कुमति आतंकी अस्थिरताई चूहों पर
बाज सी तीक्ष्ण नजर रखता है राष्ट्रवाद।
अपनी गाढ़ी कमाई का अंश देकर
सपने खरीदने वाला नींद का,
सुख का त्याग करके समर्पण की इच्छा पालने वाला
सौदागर है राष्ट्रवाद।
मिट्टी में खुशबू का हवा में मादकता का
झरनों में संगीत का आनंद लेता है राष्ट्रवाद
किसी धर्म को अधर्म की आबा नहीं देता है राष्ट्रवाद।
वो राष्ट्रवाद ही क्या जो किसी स्थान को खाली छोड़ दे
सदा भरा-भरा, हरा-हरा रहता है राष्ट्रवाद।
न खेला है, न जमघट है न खिचड़ीं है न सुर है,
न स्वर है न कला है जीव की अन्तरात्मा का
देश की मिट्टी से गहन तादात्म्य है राष्ट्रवाद

के. एस. भारती डलहौजी, जिला चम्बा हि.प्र.

मैं ------एक शब्द

प्रिय मनुष्य!
मैं, एक शब्द हूं, तुम्हारी जुबान से फिसलने वाला,
तुम्हारे दिल में छुपा, कभी मौन में भी बोलने वाला, मैं।
तुमने मुझे जन्म दिया अपनी भावनाओं से,
अपनी पीड़ा, प्रेम और प्रश्नों से।
मैं, कभी 'मां' बनकर लोरी बन गया, कभी 'ना' बनकर विद्रोह।
जब तुम रोए, मैं, चुपचाप तुम्हारी पलकों पर बैठा रहा।
जब तुम हंसे, मैं, हवा में उठ गया खिलखिलाकर।
तुमने 'मुझे' चिट्ठियों में पिरोया, डायरी के पन्नों में छुपाया,
पुस्तकों में अमर किया;
और कभी-कभी बिना कहे भी, मुझसे बहुत कुछ कह दिया।
सुनो मनुष्य!
मैं, भार भी बनता हूं, सोच समझ कर जब बोला नहीं जाता।
मैं, ज़ख्म भी दे जाता हूं जब क्रोध में उछलता हूं;
मैं, टूटे दिलों का मरहम भी हूं, और रिश्तों का कांच भी।
कभी तुम, 'मुझे' समझ नहीं पाते, और पूछते हो—
मुझसे ही, 'क्या कहूं?
मैं, तुम्हारे भीतर ही हूं; मुझे खोजो,
ख़ामोशी के नीचे, धड़कन के पास।
मैं, नहीं बदलता, बस, अर्थ बदलते हैं,
जैसे तुम्हारे 'मन' बदलते हैं।
और हां, सुनो मनुष्य! जब तुम थक जाओ शब्दों से,
तब मौन को याद करना मेरा ही भाई है, जो तुम्हारे लिए बहुत कुछ कहता है, तुम्हारा ही अनसुना, अनकहा एक शब्द, तुम्हारा।

आरती गुप्ता, शिमला, हि.प्र.

मंदिरों में बदल रहे हैं पश्चिम के चर्च

अमेरिका के 100 वर्ष पुराने एक चर्च में अब भगवान की मूर्तियां स्थापित हो चुकी हैं। इसे स्वामीनारायण संप्रदाय ने खरीद कर लगभग दो वर्ष तक जीर्णोद्धार कर भव्य मंदिर का रूप दिया है। पश्चिमी देशों में, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैण्ड और कनाडा सहित कई ऐसे देश हैं, जहां पिछले कुछ समय से चर्च बिक कर मंदिर के रूप में नजर आने लगे हैं। घटती ईसाई जनसंख्या सवाल उठता है कि पश्चिम के चर्च मंदिर में क्यों बदल रहे हैं? इसका सबसे बड़ा कारण है, अमेरिका में ईसाई समुदाय की संख्या में आई गिरावट अमेरिका में 2007 में जहां 78 प्रतिशत ईसाई थे वहां अब (2024 तक) 62 प्रतिशत ही रह गए हैं।

युवा पीढ़ी की चर्च से बढ़ती दूरी : दूसरा कारण अमेरिका में धर्म को नहीं मानने का ट्रेंड (चलन) तेजी से चल पड़ा है। युवा पीढ़ी चर्च से दूरी बना रही है। नीदरलैंड में चर्च बना राम मंदिर नीदरलैंड में भारतीय मूल की डॉ. पुष्पा अवस्थी ने दो पुराने चर्चों को खरीद कर मंदिर बना दिया है। यह मंदिर एमस्टर्डम में स्थित है। जिसमें राम दरबार, शिव परिवार, मां दुर्गा व वीर हनुमान की मूर्ति स्थापित है, जहां लगातार रामधुनी होती है। दूसरा, खोनिंग शहर में स्थित चर्च है, जिसमें राम दरबार, मां दुर्गा की मूर्ति स्थापित कर पूजा-पाठ का क्रम प्रारंभ हो चुका है। दोनों ही मंदिरों में शनिवार रविवार को बड़ी संख्या में हिंदू समाज एकत्र होता है। पिछले 25 वर्षों से विदेशों में रहकर भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा के प्रचार-प्रसार का काम कर रही प्रो. अवस्थी का कहना है कि नीदरलैंड में बीते कुछ वर्षों में ईसाई धर्म पर लोगों की आस्था कम हुई है, जिसके कारण चर्च खाली पड़े रहते हैं। इस वजह से उनका संचालन भी मुश्किल हो रहा है।

बढ़ती हिन्दू संस्कृति : हिन्दू धर्म की विश्व में वृद्धि भारत और भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर इसके सांस्कृतिक प्रसार, योग और आध्यात्मिकता में रुचि और विदेशों में प्रवासी समुदायों के कारण हो रही है। यह एक प्राचीन और विविधतापूर्ण परंपरा है जिसकी जड़ें वैदिक काल तक जाती हैं। यह दुनिया के सबसे बड़े धर्मों में से एक है, जिसके अनुयायियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

हिन्दू संस्कृति का उत्थान : दुनिया भर में बसे हिन्दू समुदायों ने अपनी परंपराओं और संस्कृति को बनाए रखा है, जिससे हिन्दू धर्म के प्रसार को बल मिला है। - योग, ध्यान और कर्म जैसी हिन्दू अवधारणाएँ दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हैं, जिससे उनकी आध्यात्मिक रुचि बढ़ रही है। वैश्विक जनसंख्या में हिन्दू धर्म के अनुयायियों का प्रतिशत बढ़ रहा है, जिससे यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म बन गया है। हिन्दू धर्म के मुख्य तत्व जो वैश्विक उत्थान में सहायक हैं- कर्म और मोक्ष हैं। कर्म के नियम में विश्वास और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की इच्छा (मोक्ष) विश्व स्तर पर लोगों को आकर्षित करती है। वेद और भगवद्गीता जैसे हिन्दू पवित्र ग्रंथ दुनिया भर के लोगों को आध्यात्मिक दिशा और ज्ञान प्रदान करते हैं। हिन्दू धर्म एक एकीकृत धर्म न होकर विभिन्न परंपराओं और दर्शनों का संकलन है, जो इसे अधिक समावेशी बनाता है और लोगों के लिए विभिन्न मार्गों को अपनाना संभव बनाता है।

मंदिर बने कुछ प्रमुख चर्च

1. स्वामीनारायण हिंदू मंदिर, पोर्ट्समाउथ, वीए यूएस, 2018
2. स्वामीनारायण, हाईलैंड मेनोनाइट चर्च, डेलावेयर यूएस, 2021
3. उडुपी कृष्ण मंदिर, एडिसन, एनजे यूएस, 2017
4. स्वामीनारायण, सेंट जॉन्स बैपटिस्ट चर्च, , लंदन, 1970
5. स्वामी नारायण मंदिर, बोल्टन यूनिटी चर्च, बोल्टन, यूके, 1973
6. बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर, टोरंटो, कनाडा,
7. भगवान स्वामीनारायण मंदिर, लॉस एंजिल्स, सीए यूएस, 2012
8. स्वामी नारायण, गोशेन मेथोडिस्ट चर्च, लुइसविले, यूएस, 2013
9. स्वामीनारायण मंदिर, डुनामिस चर्च लुइसविले, यूएस, 2013
10. स्वामीनारायण मंदिर, सेंट निनियन चर्च, लंदन यूके, 1982
11. स्वामीनारायण मंदिर, स्कारबोरो, कनाडा, 2013
12. अष्टलक्ष्मी मंदिर, लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया, अमेरिका,
13. एबरडीन मंदिर, ओल्ड स्टोनीवुड चर्च, स्कॉटलैंड, 2019
14. हिंदू प्रार्थना मंदिर, फर्न एवेन्यू चर्च, टोरंटो, कनाडा, 1979

राष्ट्र और अराष्ट्र की पहचान

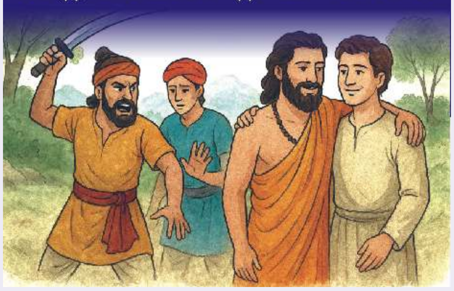

आज मित्रता का बहुत चलन है खासकर फेसबुक पर खाने को हजारों हजारों मित्र होते हैं परंतु अच्छे बुरे वक्त में कोई काम नहीं आता केवल स्टेटस के तौर पर ही कहा जा सकता है कि हमारी मित्रता सूची कितनी लंबी है। ऐसा खोखलापन अपनी बधाई करने के लिए तो हो सकता है परंतु इससे सही मायने में आनंद नहीं मिल सकता। तो केवल एक अच्छे मित्र की संगति से मिल सकता है जो सुख में साथ खड़ा होता है और सही मार्ग पर ले जाने का प्रयत्न करते हुए मित्रता निभाता है। गलत मार्ग से रोकना और उचित मार्ग की तरफ बढ़ाना ही मित्रता का श्रेष्ठ एवं स्वाभाविक गुण भी है। विरोध करने वाला शत्रु नहीं अपितु गलत कार्यों का विरोध न करने वाला परम शत्रु होता है। दुर्योधन ने चाचा विदुर की बात मान ली होती तो महाभारत नहीं होता और रावण ने भाई विभीषण की बात मानी होती तो लंका विध्वंश नहीं होता। वास्तव में सच्चा मित्र वही है जो हमारी मति सुधार दे, जीवन को श्रेष्ठ गति देते हुए गोविन्द के चरणों में रति प्रदान कर दे। लोग सोचते हैं कि स्वजन-प्रियजन वही है, जो प्रत्येक स्थिति में आपका साथ दें लेकिन वास्तव में सच्चे प्रियजन वही हैं जो सदैव अनुचित मार्ग से आपको बचाने का प्रयास करें। वह व्यक्ति किंचित आपका शत्रु नहीं हो सकता जो आपको आपकी गलतियों का बार-बार स्मरण कराये अपितु वह आपका शत्रु अवश्य है जो आपके गलत दिशा में बढ़ते हुए कदमों को देखकर भी रोकने का प्रयास न करे। सौभाग्यशाली हैं वो लोग जिनके जीवन में उचित-अनुचित की परख करवाने वाले मित्र होते हैं।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. दुर्गाबाई आर्य किस जिला से संबंध रखी थी?
   (1) शिमला (2) कुल्लू (3) ऊना
2. शिमला में किस देवी का प्राचीन मंदिर है ?
   (1) काली बाड़ी (2) संकट मोचन (3) ढींगू माता
3. परमवीर चक्र किसने प्राप्त किया है ?
   (1) श्री संजय कुमार (2) विक्रम बतरा (3) खुशहाल ठाकुर
4. मणि महेश्वर किस पर्वत पर स्थित है ?
   (1) धौलाधार (2) शिवालिक (3) किन्नर कैलास
5. भाखड़ा बांध हिमाचल के किस जिला में है ?
   (1) ऊना (2) कांगडा (3) चंबा
6. थुनाग किस जिला का क्षेत्र है ?
   (1) मंडी (2) कुल्लू (3) शिमला
7. बाढ़ प्रभावितों को मोदी जी ने कितनी राहत राशि दी है?
   (1) 15500 करोड (2) 15000 करोड (3) 16000 करोड
8. मंडी के प्रमुख देवता का नाम क्या है?
   (1) श्री माधोराय (2) महादेव (3) टारना माता
9. हिमाचल प्रदेश किस झील में रुपए और सोना चांदी डाला जाता है ?
   (1) श्री कमरू नाग (2) डल झील (3) भागसू नाग
10. बाला सुंदरी मंदिर कहां स्थित है ?
    (1) किन्नौर (2) सिरमौर (3) हमीरपुर

उत्तर - 1. ऊना 2. काली बाडी 3 श्री संजय कुमार 4. धौलाधार 5 ऊना 6. मंडी 7. 15000 करोड 8. श्री माधोराय 9. श्री कमरू नाग 10. सिरमौर

शिक्षाप्रद चुटकुले

बच्चा: दादी माँ, सुभाष चंद्र बोस जी हमेशा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' क्यों कहते थे? **दादी:** ताकि बच्चों को समझ आए - त्याग के बिना बड़ी जीत नहीं मिलती। **बच्चा:** मतलब होमवर्क किए बिना अच्छे अंक भी नहीं मिलते!

◆◆◆

टीचर: अगर पृथ्वी से सूरज तक का रास्ता तय करने में एक घंटा लगे, तो चाँद तक कितना समय लगेगा?

गोलू : मैम, पहले तो पृथ्वी पर ट्रैफिक खत्म हो जाए, फिर बताऊंगा!

◆◆◆

पप्पू : मैम, 'कर्म' और 'कर्मा' में क्या अंतर है?

टीचर : 'कर्म' करना पड़ता है, 'कर्मा' भुगतना पड़ता है। **पप्पू :** तो मैम, मैं तो हमेशा 'कर्मा' में फंस जाता हूँ!

◆◆◆

संजू : अगर मैं बर्फ खाऊं, तो क्या मुझे ठंड लगेगी?

टीचर : हाँ, लेकिन ज्ञान की ठंड सबसे अच्छी होती है!

एसजेवीएन SJVN

विद्युत उत्पादन से राष्ट्र का सशक्तिकरण

हमारा साझा विजन

2040 तक **50000** मेगावाट

2030 तक **25000** मेगावाट

घरों, उद्योगों एवं अर्थव्यवस्थाओं के लिए स्वच्छ, विश्वसनीय एवं स्थाई ऊर्जा प्रदान करने में अग्रणी

एक सतत् एवं समावेशी भविष्य के लिए हमसे जुड़ें।
आइए मिलकर प्राकृतिक ऊर्जा को अपनाएं, नवाचार को आगे बढ़ाएं और एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का निर्माण करें।

पंजीकृत कार्यालय : शक्ति सदन, कारपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला–171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)

सम्पर्क कार्यालय : ऑफिस ब्लाक, टॉवर–1, 6वीं मंजिल, एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN LIMITED

(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

'नवरत्न सीपीएसई'

www.sjvn.nic.in

@Sjvnlimited @Sjvnlimited @sjvnlimited

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला–171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on : YouTube